तीन युगों में

शेरां वाली

सतयुग में, त्रेता युग में, कलयुग में



माता वैष्णों देवी की युगों-युगों की कहानी

तीन युगों में

शेरां वाली मां

सतयुग में, त्रेतायुग में, कलियुग में



प्रकाशक

भवानी पुस्तक महल

कटरा (वैष्णों देवी)

[मूल्य ५) रुपये

प्रकाशक :
भवानी पुस्तक महल,
कटरा वैष्णों देवी (जम्मू)

इस पुस्तक के प्रकाशन में जिन जिन कवियों और पुस्तकों की सहायता ली गई है हम उनके आभारी हैं।

मूल्य
५) रुपया

मु –
राम प्रिंटिंग प्रेस,
गली [illegible]मोसान, फरासखाना,
दिल्ली-११०००६

देवी की उत्पत्ति

पौराणिक कथा

पौराणिक कथानुसार एक समय सुरथ नाम के राजा ने कुटुम्ब से उदासीन होकर, राज-पाट त्याग कर, मुनियों जैसा वेष धारण कर लिया और घोर वन की ओर चले गये। वहां उनकी भेंट समाधि नामक एक वैश्य से हुई जो ज्ञान प्राप्ति की इच्छा से घर छोड़कर आया था। दोनों मिलकर सुमेधा ऋषि के आश्रम पर पहुँचे। सुमेधा ऋषि ने उन्हें आदि शक्ति महामाया की निम्न कथा सुनाई—

एक बार जब भगवान विष्णु अपार सागर में अपनी नाग शैया पर शयन कर रहे थे तो उनकी नाभि कमल से पैदा हुए, ब्रह्मा ने कानों की मैल से अति दीर्घ देह वाले मधु कैटभ नाम के दो दैत्यों की रचना की। उन राक्षसों को देखकर लोकेश भयभीत हो गये और हृदय में असुरों के नाश के लिये जगमाता (शक्ति) का ध्यान करने लगे।

मधु कैटभ वध

इधर मधु कैटभ ने अपने बाहुबल से अन्य देवताओं को सताना और उनके अधिकार छीनने आरम्भ कर दिए। कई देवताओं ने मिलकर उनसे युद्ध किया लेकिन पाँच हजार वर्ष तक लड़कर भी देवता महाबली दैत्यों को न मार सके। हार कर देवताओं ने शक्ति की आराधना की तो शक्ति ने चण्डी रूप में प्रकट होकर असुरों का संहार किया। राक्षसों के वध से देवताओं को पुनः राज्य प्राप्त हुए और समाज सुखी हुआ।

बहुत समय बाद पुनः एक राक्षस महिषासुर उत्पन्न हुआ जिसने अपनी भुजाओं के बल पर समस्त संसार को जीत लिया। देवताओं और राक्षसों में एक सौ वर्ष तक घोर संग्राम हुआ। परिणाम यह हुआ कि देवताओं को राक्षसों से पराजित होना पड़ा और उनका समस्त राज-पाट दैत्यों ने संभाल लिया। अपने अधिकार खो जाने पर देवता एकत्र होकर ब्रह्माजी के पास गये और महिषासुर के अन्याय की सब कथा कह सुनाई।

देवताओं की बात सुनकर ब्रह्माजी बोले कि मैं तो महिषासुर को वरदान दे चुका हूँ कि उसकी मृत्यु किसी

कुंआरी कन्या के हाथों से होगी। हम उसे पराजित नहीं कर सकते।

ब्रह्माजी के मुख से ये शब्द सुनकर देवताओं में नीरवता छा गई। वह बोले—'नहीं प्रभु, हमें हमारे अधिकार चाहिये। हमारी सहायता का कोई अन्य उपाय निकालिये।

महिषासुर के विनाश के लिये अन्य उपाय की खोज में समस्त देवता ब्रह्माजी को साथ लेकर भगवान शंकर और भगवान विष्णु के पास गये। देवताओं की दुःखी आत्माओं ने राक्षसों के अत्याचार का वर्णन उन्हें भी सुनाया—हे प्रभु! उन महापराक्रमी दैत्यों ने हमें अपने अधिकारों से वंचित कर दिया, घर-बार सब उजाड़ दिए। लोकेश! अग्नि, सूर्य, इन्द्र, चन्द्र, वरुण हम सब देवताओं का सुख चैन छीनकर दैत्यों ने हमें जबरदस्ती बाहर धकेल दिया है। हम आपकी शरण हैं, रक्षा करो।

देवताओं के तेज से देवी का प्रकट होना—

देवताओं की यह दुखमय कथा सुनकर भगवान विष्णु और शंकर जी के मस्तक से बिजली कड़कने लगी। क्रोध

के कारण मुख से एक महान् शक्तिशाली तेज प्रकट हुआ ब्रह्माजी के क्रोधित शरीर से भी इसी प्रकार का तेज निकला। जब समस्त देवताओं के तेज एक ही स्थान पर प्रकट हुए तो वह महान तेज संसार के हर कोने को रोशन करने लगा। जब यह तेज एकत्र हुए तो उसने एक अति सुन्दर नारी 'देवी' का रूप धारण कर लिया। जो देव नगरी में सबसे महान और शक्तिशाली प्रतीत होता था। विभिन्न अंग बने—

भगवान शंकर के तेज से उस देवी का मुख प्रकट हुआ यमराज के तेज से मस्तक के केश, विष्णु के तेज से भुजायें चन्द्रमा के तेज से स्तन, इन्द्र के तेज से कमर, वरुण के तेज से जंघा, पृथ्वी के तेज से नितम्ब, ब्रह्मा के तेज से चरण सूर्य के तेज से दोनों पैरों की उंगलियां, वसुओं के तेज से दोनों हाथ की उंगलियां, प्रजापति के तेज से सारे दांत, अग्नि के तेज से दोनों नेत्र, संध्या के तेज से भौंहें, वायु के तेज से कान और अन्य देवताओं के तेज से देवी के भिन्न-भिन्न अंग बने।

इसके पश्चात् भगवान शिव ने उस देवी को अपना त्रिशूल दिया, विष्णु ने चक्र, वरुण ने दिव्य शंख और

पास, अग्नि ने शक्ति व बाणों से भरे तरकश, इन्द्र ने वज्र, यमराज ने दण्ड प्रजापति ने स्फटिक मणियों की माला, ब्रह्माजी ने कमडल, काल ने ढाल तलवार, इसी प्रकार भगवान राम ने धनुष, हनुमान ने गदा आदि अस्त्र शस्त्र उस देवी की भेंट किए। सूर्य ने उसके रोम-कूपों में अपनी किरणों को भर दिया। समुद्र ने बहुत उज्ज्वल हार, कभी न फटने वाले दिव्य वस्त्र, चूड़ामणि, दो कुण्डल, हाथों के कंगन, दोनों भुजाओं के लिए मयूर पैरों के नू पुर, गले के लिए सुन्दर हंसली और सब उंग-लिए में पहनने के लिए अंगूठियां भेंट कीं। विश्वकर्मा ने निर्मल फरसा, लक्ष्मी जी ने कभी न मुरझाने वाले फूल और हिमालय पर्वत ने उस देवी को सवारी के लिए सिंह प्रदान किया।

इस प्रकार सब देवताओं ने देवी को अनेक प्रकार के आयुधों से सुसज्जित करके सम्मानित किया और महिषा-सुर के वध के लिए देवी से प्रार्थना की।

महिषासुर वध

महाशक्ति ने जब क्रोध में आकर गर्जना की तो भूमण्डल कांपने लगा। आकाश पर बिजली कड़कती प्रतीत

होने लगी। यह देखकर सभी देवताओं ने संगठित स्वर से शक्ति की जय बोली। इस समय महिषासुर अपनी भक्ति में लीन था उसने देखा कि पृथ्वी से आकाश तक उथल-पुथल मची है। किसी अज्ञात शक्ति की जय-जयकार हो रही है। क्रोध में आकर उसने उस शक्ति का नाश करने की ठान ली और वह महाबली अपने सारे दैत्यों को लेकर शक्ति को मारने के लिए दौड़ा। महिषासुर की देवी की ओर देखते ही आंखें चुंधिया गई, दुर्गा अपने विराट और क्रोधित रूप में खड़ी थी।

देवी का दैत्यों से युद्ध

सर्व प्रथम महिषासुर का सेना नायक देवी से लड़ने आया। लाखों राक्षस अनेक अस्त्रों-शस्त्रों से अकेली देवी पर लगातार प्रहार करते रहे और जगदम्बा मातेश्वरी दुष्ट आत्माओं का खातमा करती रही। मां दुर्गा ने कई बड़े-बड़े राक्षसों को अपनी गदा और त्रिशूल से मौत की नींद सुला दिया। अनगिनत राक्षस मारे गये और हजारों अपनी बांहें खो बैठे। कइयों का सिर धड़ से अलग हो गया। जो मूर्ख थे मैदान छोड़ कर भाग गये। कई

दैत्य मौत के डर से देवी के पांवों पर गिर कर क्षमा मांगते रहे।

दैत्यों के इस घोर विनाश को देखकर महिषापुर का एक सेनापति चिक्षुर क्रोधित स्वर से चिल्लाया—'ऐ कन्या तूने मेरी सेना को तो मौत के घात उतार दिया लेकिन तुझे मेरी शक्ति का अनुमान नहीं अब तू मेरे लोहे जैसे बल-शाली हाथों से बचकर नहीं जा सकती। मैं तेरा सर्वनाश कर दूंगा।' और फिर पल भर में ही सेनापति अपने थके हुए साथियों के साथ तीरों की ऐसी बौछार करने लगा कि जैसे आंधी चलने से रेत उड़ती है।

रणभूमि की यह दशा और राक्षसों के इतने तेज प्रहार को देखकर देवी ने भी क्रोध से तीर कमान निकाला और एक तीर दैत्य की ओर छोड़ा। उस एक तीर से ही इतने तीर निकलने लगे कि जैसे भयानक रात में लाखों जुगनू भटक रहे हों। इन तीरों से राक्षसों के सीने छलनी कर दिए। लड़ते लड़ते सेनापति चिक्षुर के सारे हथियार समाप्त हो गये तो वह ढाल और तलवार लेकर ही माते-श्वरी की तरफ दौड़ा। उसने तलवार से देवी पर प्रहार किया लेकिन जब तलवार देवी के शरीर से टकराई तो टुकड़े-टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। फिर चिक्षुर ने

त्रिशूल से देवी पर वार किया। चमकते हुए त्रिशूल को अपनी ओर आता देखकर जगदम्बा ने भी उस पर त्रिशूल फेंका। देवी का त्रिशूल चिक्षुर की ओर चला और फिर उस त्रिशूल ने सेनापति का सीना चीर डाला।

अपनी सेना का खून पानी की तरह बहता देखकर महिषासुर ने एक विकराल भैंसे का रूप धारण करके देवी को मारने की एक असफल कोशिश की। यह देख कर जगदम्बा को बड़ा क्रोध आया और उसने किसी प्रकार दैत्यराज महिषासुर को बांध लिया। लेकिन उसी समय महिषासुर ने भैंसे का रूप त्याग कर सिंह रूप धारण कर लिया। जब देवी ने उसे भी अपने बाणों से वश में कर लिया तब उसने अपने आपको एक बड़े गजराज में बदल लिया और अपनी सूंड से देवी को अपनी ओर खींचने लगा। देवी ने भी तीव्र प्रहार किया और गजराज की सूंड काट डाली। तब पुनः महिषासुर महादैत्य ने अपने को भैंसे के शरीर में परिवर्तन कर दिया।

महिषासुर गरजने लगा!

उसके स्वर से त्रिलोकी व्याकुल हो उठी!

इस समय माता भी अपनी शक्तियों से महिषासुर के चलाये शस्त्रों को चकनाचूर करने लगी। तीव्र क्रोध में आकर शक्ति ने भी गर्जना कर कहा—'तूने अभिमान में आकर देवताओं से उनके अधिकार छीन कर उनकी पवित्र आत्माओं को बड़ा कष्ट दिया है। मूर्ख! मैं तेरा सर्वनाश करके ही चैन लूंगी।' इतनी कहते ही देवी ने उछल कर महिषासुर को पकड़ लिया। अपने पांव तले दबाकर उसके कण्ठ पर त्रिशूल का प्रहार किया तो महिषासुर अपने असली रूप में भैंसे के शरीर से बाहर आने लगा। अभी वह आधा ही बाहर आ पाया था कि देवी ने अपनी शक्ति से उसे वहीं रोक दिया और तलवार से उसका सिर काट डाला।

अपने महाराज दैत्य महिषासुर की इतनी बुरी दशा देख कर शेष सभी मैदान छोड़ कर भाग गये। महिषासुर को मरा देखकर सब देवी देवताओं में खुशी की लहर दौड़ गई और सब मिलकर माता दुर्गा जी की आरती उतारने लगे। विजय प्राप्ति के बाद समस्त देवताओं ने देवी के आगे नतमस्तक होकर बारम्बार यही विनय की, "आपने महान बलशाली राक्षस को मार कर हमें प्रसन्न किया, हमारे अधिकार हमें प्राप्त हुए। हमारी सब इच्छायें

पूर्ण हो गई हैं। अब हम आपसे यही विनय करेंगे कि जब भी हम आपका स्मरण करें, आप दर्शन दिया करें और हमारे संकटों का निवारण करें। हम आपके भक्त हैं हमारी मुसीबत के समय में आप हमारे शत्रुओं का नाश करके सबको प्रसन्न किया करें।

शुम्भ और निशुम्भ का अत्याचार

महिषासुर के बाद शुम्भ और निशुम्भ दो और असुर हुए जिन्होंने इन्द्र, सूर्य, अग्नि आदि देवताओं को अधिकार हीन करके राज्य छीन कर इन्द्रपुरी पर आसन जमा लिया। एक बार फिर देवताओं को राक्षसों से अपमानित होना पड़ा। तब देवताओं ने मातेश्वरी को याद किया और विचारा कि माता ने हमको वरदान दिया था कि जब भी मेरे भक्तों पर आपत्ति आवेगी मैं उनकी रक्षा करूंगी। महिषासुर की तरह नये उठने वाले राक्षसों का वध कर दूंगी।

श्री दुर्गा जी के इस आश्वासन का ध्यान कर देवता माता के आमन्त्रण के लिए हिमालय पर जाकर उनकी स्तुति करने लगे। इस प्रकार जब सारे देवता मिलकर महा

शक्ति का आह्वान कर रहे थे तो देवी पार्वती उधर से आ निकली। उस अति सुन्दर पार्वती ने देवताओं से पूछा–आप किसका आह्वान कर रहे हैं, किसकी स्तुति में मग्न हैं? तब देवता बोले–हे भगवती शुम्भ और निशुम्भ ने हमारा अपमान किया है उन्हीं के अत्याचारों से पराजित होकर हम यहां सहायता के लिए श्री दुर्गा जी को याद कर रहे हैं। देवताओं का यह उत्तर सुनकर पार्वती जी वहां से लोप हो गई।

एक दिन शुम्भ और निशुम्भ के दो शक्तिशाली दूत जिनका नाम चण्ड और मुण्ड था घूमते हुए हिमालय पर आ निकले। वहां उन्होंने अति सुन्दर रूप में मां अम्बे को भक्ति में लीन देखा। उन्होंने ऐसी मनोहर रूप की नारी को पहले कभी न देखा था, रूप ऐसा सुन्दर कि पूरा हिमालय आलोकित हो रहा था। चण्ड और मुण्ड ने इस अनुपम सुन्दरी का वर्णन तुरन्त जाकर अपने स्वामी शुम्भ और निशुम्भ से इस प्रकार किया। उसका दुख दूर करने वाला जैसा मुख है पलकें सर्प की शोभा को चुराती हैं। नेत्र कमल से बढ़कर हैं, धनुष जैसी भवें हैं, बाण, जैसी पलकें हैं, सिंह जैसा कटि भाग है, हस्त जैसी गति, रति की शोभा को भी हरने वाली है। हाथ में खड्ग है जो सूर्य के समान प्रकाशवान है, मनोहर रूप

धारण किए वह शिव की अर्धाङ्गिनी प्रतीत होती है। उस सुन्दरी की ऐसी प्रशंसा सुनकर शुम्भ ने दूतों को देवी के पास विवाह का प्रस्ताव देकर भेजा! दूतों ने जाकर जब देवी से शुम्भ की बात कही तो देवी ने उत्तर दिया। रे मतिहीन, जाकर दैत्य से कह दे कि जो मुझको युद्ध में जीतेगा मैं उसी को वर मानूंगी।

धूम्रनयन वध

शुम्भ और निशुम्भ की सभा में दूत ने जाकर जब देवी की यह बात कही तो सभी के मध्य से धूम्रनयन नामक राक्षस ने उठकर बड़े गर्व से कहा—मैं उसको बातों में ही रिझाकर ला सकता हूँ अगर वह न मानेगी तो केश पकड़ कर घसीट लाऊंगा।

धूम्रनयन की ऐसी बात सुनकर शुम्भ ने उसे देवी को लाने के लिए एक बड़ी सेना देकर भेज दिया। इसी सेना में शुम्भ के दो बड़े विश्वस्त दैत्य चण्ड और मुण्ड भी थे।

उधर चण्ड-मुण्ड के साथ एक बड़ी राक्षसी सेना को आता देखकर देवी को बड़ा जबरदस्त क्रोध आ गया और इस क्रोध के कारण जगदम्बा का मुख काला पड़ गया और तुरन्त ही वहां विकराल रूप में काली देवी प्रकट हुई।

बड़े-बड़े राक्षसों को मारती हुई महाकाली ने अपनी कृपाण से धूम्रनयन का सिर एक झटके में अलग कर दिया और महाबली धूम्रनयन सदा के लिए रणभूमि में सो गया।

चण्ड मुण्ड वध

जब सेनापति धूम्रनयन मारा गया तो मुण्ड को क्रोध आ गया। वह आगे बढ़-बढ़ कर काली पर हमला करने लगा। मुण्ड से भयानक युद्ध के बाद देवी ने मुण्ड का सिर इस प्रकार अलग कर दिया जैसे बेल से कद्दू गिर जाता है।

अब देवी ने बरछा लेकर ऐसे मारा कि चण्ड का सिर धड़ से अलग होने में एक क्षण की भी देर न लगी।

अपने महान दैत्यों को मारे जाने पर शुम्भ निशुम्भ ने एक विशिष्ठ राक्षस रक्तबीज को लड़ने के लिए भेजा। रक्तबीज को यह वरदान था कि उसके शरीर से जितनी रक्त की बूंदें जमीन पर गिरेंगी उतने ही रक्तबीज और पैदा हो जायेंगे। रक्तबीज को वास्तव में इसका अभिमान होना भी ठीक ही था। वह किसी भी रणभूमि में सहर्ष

जाया करता और आज वह उसी हर्ष से देवी से लड़ने निकल पड़ा। देवी को समक्ष देखकर उसने घोर अट्टहास किया और तीरों की ऐसी वर्षा की देखने वालों को भ्रम होने लगा कि वास्तव में वर्षा है या तीरों की बौछार। एक दूसरे पर प्रहार का यह क्रम लगातार बहुत समय तक चलता रहा। अब तक दुर्गा ने रक्तबीज पर जितने प्रहार किये उनसे रक्तबीज के शरीर से जगह-जगह खून बह रहा था तथा उस खून की जितनी बूंदें भूमि पर गिरती उतने ही रक्तबीज और पैदा होते जाते थे। इस प्रकार उत्पन्न अनगिनत रक्तबीजों ने दुर्गा और उसके सिंह को घेर लिया लेकिन चण्डी और सिंह ने मिलकर युद्ध में उन सब दैत्यों का समूह मार गिराया।

इस प्रकार जब रक्तबीज के रक्त से बार-बार अनेकों रक्तबीज उत्पन्न होते रहे तो चण्डी ने काली से कहा कि मैं इस महाबलशाली दैत्य पर प्रहार करूं तो तुम इसके खून को जमीन पर न गिरने दो। तब काली ने अपने रौद्र रूप में हाथ में खप्पर लेकर रक्तबीज से गिरने वाली खून की बूंदों को खप्पर में भर-भरकर पिया। माता ने रक्त-

बीज को जब अन्तिम बार त्रिशूल से मारा तो काली माँ ने उसका सारा खून पी लिया। इस प्रकार शक्ति ने उसका सर्वनाश किया।

निशुम्भ वध

जो मामूली राक्षस बच रहे उन्होंने जाकर अपने स्वामी शुम्भ और निशुम्भ से शोणित बिन्दु के मारे जाने की खबर दी। यह सुनकर निशुम्भ हाथ में खड्ग संभालते हुए बोला—क्या रक्तबीज भी चण्डी से ऐसे ही मारा गया जैसे जंगल का सिंह छोटे जानवरों आदि को मार डालता है।

कोप में भर कर शुम्भ निशुम्भ ने युद्ध की ऐसी दुन्दुभी बजाई कि दसों दिशायें गूंज उठी। रणनीति के अनुसार अपनी सेनाओं को अनेक प्रकार से सजाकर ध्वजा फहराता हुआ निशुम्भ ऐसे चला मानों कोई पहाड़ ही उड़कर चल दिया हो। हर ओर धूल ही धूल उड़ने लगी। उधर चण्डी के कानों में भी एक नये दैत्य के आगमन की भनक पड़ी। चण्डी ने भी पहाड़ से उतर कर शत्रु को ललकारते हुए महान कोलाहल किया। देवी को देखते ही निशुम्भ ने एक बहुत बड़ा धनुष तान लिया उसकी

टंकार ही ऐसी बजी कि मानो बादल गरज रहे हों। ऐसे भयंकर दैत्य को देखकर देवी ने अपनी सारी शक्तियों को अपने में समा लिया। देवी और निशुम्भ का घोर संग्राम हुआ। शत्रुओं के सिर ऐसे गिर रहे थे जैसे शहतूत के वृक्ष को हिलाने से शहतूत गिरते हैं। पूर्ण क्रोध में भर कर जब चण्डी ने निशुम्भ पर तीर मारा तो उसका सिर भी दो टुकड़े होकर गिरा और रणभूमि में अंधेरा छा गया।

शुम्भ वध

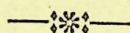
निशुम्भ का सिर जब इस प्रकार मैदान में गिर गया तो दैत्य अपना धनुष-बाण छोड़ वहां से दौड़कर शुम्भ के पास गये और उसे उसके भाई के मारे जाने की सूचना दी।

अपने प्यारे भाई के मारे जाने पर शुम्भ के क्रोध का ठिकाना न रहा। वह बिना एक पल भी व्यतीत किये मातेश्वरी से जाकर बोला—तूने काली समेत अन्य शक्तियों की सहायता लेकर मेरी इतनी बड़ी सेना और मेरे भाई को मारा है अब देख मैं तुझसे अकेले ही बदला लूंगा।

मातेश्वरी ने कहा—'मेरे साथ अन्य कोई दूसरी

शक्ति नहीं है। समय आने पर मेरी शक्ति अलग-अलग रूप धारण कर मेरे ही शरीर से निकलती है और फिर मुझ में ही प्रवेश कर जाती है। यह देख अब मैं तुझ से लड़ने के लिए अकेली ही खड़ी हूँ, तैयार हो जा !' और फिर देवी से शुम्भ का घोर युद्ध हुआ।

युद्ध में शुम्भ के भी प्राण निकल गये और सब देवताओं ने मिलकर फिर माता का जैकारा बोला।



श्री वैष्णव देवी दरबार यात्रा

(इतिहास और पथ प्रदर्शिका)

वैष्णव माता कटरा से लगभग १४.५ किलोमीटर ऊपर समुद्र सतह से २५०० फुट की ऊंचाई पर त्रिकूट पर्वत की घाटी की सुन्दर गुफा में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के पिण्डी रूप में निवास कर भक्तों की मनोकामना पूर्ण कर रही हैं।

यात्रा का समय

सामान्य रूप से श्रद्धालु यात्री गण पूरे वर्ष भर माता वैष्णों के दर्शन के लिए आते हैं। परन्तु आश्विन व

चैत्र मास की नवदुर्गाओं या नवरात्रों में यात्रा करने का विशेष माहात्म्य माना गया है। जनवरी एवं फरवरी में हिमपात होने से मार्ग कठिन हो जाता है। अतः इन दो महीनों में छोटे बच्चों व बूढ़ों को साथ लेकर यात्रा करना उचित नहीं रहता। नवयुवकों के लिये तो सभी मौसम उपयुक्त हैं। चैत्र व आश्विन के नवरात्रों (मार्च-सितम्बर) में सपरिवार यात्रा बड़ी सुविधा से की जा सकती है। इन दिनों मौसम भी सुहावना हो जाता है।

यातायात

(१) जम्मू तक यात्री देश के विभिन्न भागों से बस या रेल द्वारा पहुँचते हैं। जम्मू से कटरा के लिए लगभग हर आधे घण्टे या एक घण्टे बाद बसें चलती रहती हैं। किराया ३ रु० ५० पैसे प्रति व्यक्ति है। डीलक्स बस का किराया ५ रु० ५० पैसे प्रति व्यक्ति है।

(२) जम्मू से कटरा के लिए टैक्सी भी उपलब्ध है। चार व्यक्तियों का टैक्सी भाड़ा ६० रु० है।

(३) कटरा से पहाड़ी मार्ग पैदल शुरु होता है। डांडी, घोड़ा, खच्चर व कुली (पिट्ठू) निर्धारित किराए पर मिल सकते हैं।

❁ कटरा ❁

समुद्र तल से लगभग २५०० फुट की ऊंचाई पर त्रिकूट पर्वत के चरणों से बसी यह सुन्दर बस्ती श्री वैष्णव देवी यात्रा की आधार रूप है। कटरा से दरबार तक १४.५ किलोमीटर की दूरी रह जाती है, जो प्रत्येक यात्री को पैदल अथवा घोड़े आदि पर तय करनी होती है मार्ग में स्थान-स्थान पर प्याऊ (छबील) आदि लगी हुई हैं। सरकार की ओर से नल का भी प्रबन्ध है, पूरे मार्ग में बिजली के प्रकाश का प्रबन्ध है, फिर भी रात को यात्रा करते समय टार्च रखना आवश्यक है।

कटरा में एक ही लम्बा बाजार है, जहां दैनिक उपयोग व यात्रा सम्बन्धी लगभग सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं। खाने-पीने के लिए कई होटल व ढाबे आदि हैं, उचित मूल्य पर अच्छा खाना मिलता है।

ठहरने के लिए भी कटरा में कोई कठिनाई नहीं है कई धर्मशालाएं, होटल व प्राईवेट हाऊस हैं। इसके अतिरिक्त टूरिस्ट विश्राम गृह भी बने हुए हैं। मुख्य धर्मशालाएं—धर्मार्थ सराय, चिन्तामणि ट्रस्ट, दिल्ली वाली सराय, श्रीधर सभा सराय। टूरिस्ट रिसेप्शन सेन्टर में अतिरिक्त सामान आदि भी २५ पैसे प्रति नग के

हिसाब से जमा किया जा सकता है। कटरा में रघुनाथ मन्दिर व चिन्तामणि मन्दिर दर्शनीय है।

—०—

 आवश्यक सूचना 

* वैष्णव देवी दरबार जाने वाले प्रत्येक यात्री के लिए कटरा से 'यात्री-पर्ची' प्राप्त करना अनिवार्य है यात्रा पर्ची बस स्टेन्ड पर ही स्थित, टूरिष्ट रिसेप्शन सेन्टर कटरा में, सुविधा से मिलती है। इसके लिए कोई शुल्क नहीं देना होता। यात्रा पर्ची के बिना यात्रियों को बाण गंगा से वापिस आना पड़ता है। भवन पर पहुँचकर यही पर्ची दिखाकर पवित्र गुफा में दर्शन के लिये नम्बर मिलता है।

* चमड़े के जूते पहन कर पहाड़ी यात्रा नहीं करनी चाहिये। धार्मिक भावना से भी कपड़े अथवा रबड़ के जूते ही उचित हैं कटरा में कई दुकानों से उचित किराये पर कपड़े के जूते सुविधा से मिल जाते हैं नये भी खरीद सकते हैं।

* यात्रा सादगी एवं पवित्रता के साथ करें। यात्रा में मद्य, मांस व किसी प्रकार का नशा वर्जित है।

* वर्षा ऋतु में छाता या बरसाती आदि लाना चाहिए। बांस की छड़ी, सूखे मेवे, बिस्कुट, भेंट की सामग्री (नारियल), चोले, चुन्नी, ध्वजा, छत्र, पान सुपारी आदि) थरमस, चूर्ण, टार्च, कैमरा, दूरबीन यदि इच्छा हो साथ ले जाना चाहिये। यह सब वस्तुएं कटरा में सुविधा से उचित मूल्य पर मिल जाती हैं। छड़ी कैमरा व टार्च आदि कटरा की दुकानों से किराये पर मिलते हैं।

रेजगारी (कटरा से दरबार तक स्थान-स्थान पर छोटी-छोटी कन्याओं को बांटने तथा मन्दिरों आदि पर चढ़ाने के लिये) साथ रखें। कटरा की दुकानों से रेजगारी मिल जाती है।

गुफा से निकलने वाले पवित्र जल को प्रसाद रूप में साथ लाने के लिये कोई शीशी या बर्तन साथ ले जावें।

एक ही दिन में पूरी यात्रा न कर सकने वाले यात्री आदि कुमारी नामक स्थान पर विश्राम कर सकते हैं। यह स्थान लगभग आधे रास्ते में है। आदि कुमारी तथा वैष्णों देवी दरबार दोनों ही स्थानों पर कम्बल, दरी, स्टोव तथा खाना बनाने के बर्तन आदि मूल्य जमा कराने पर निःशुल्क उपयोग के लिये मिल जाते हैं। वस्तुओं को

लौटा देने पर जमा किया हुआ धन वापिस मिल जाता है। यह प्रबन्ध धर्मार्थ संस्थाओं की ओर से किया गया है।

—०—

वैष्णव माता के अवतार धारण की कथा--

देश में विपरीत परिस्थतियां होने पर, समय-समय पर महाशक्ति ने अपने भिन्न-भिन्न रूप धारण कर, दुष्टों का नाश व भक्तों की रत्ता की है। देवताओं के एकत्रित तेज समूह से उत्पन्न महाशक्ति ने ही कालान्तर में महाकाली, महालत्त्मी एवं महासरस्वती रूप धारण किए—यह तीनों रूप रज, तम एवं सात्विक गुणों के प्रतीक हैं।

त्रेतायुग में जब इस पृथ्वी पर रावण, कुम्भकर्ण, ताड़का, खरदूषण आदि दैत्यों ने अत्याचार प्रारम्भ किये तब महाकाली, महालक्ष्मी, एवं महासरस्वती तीनों महाशक्तियों ने धर्म की रत्ता के लिए अपने तेज समूह से एक दिव्य शक्ति को जन्म देने का निश्चय किया। तीनों शक्तियों के स्वरूपों से तेज एकत्रित हुये और संयुक्त होकर एक सुन्दर दिव्य कन्या के रूप में प्रकट हो गये।

उस कन्या ने महाशक्तियों से पूछा—आपने मुझे क्यों उत्पन्न किया है ? उत्तर मिला कि इस संसार में हमने तुम्हें धर्म की रक्षा एवं प्रचार के लिए प्रकट किया है। अब तुम दक्षिण भारत में रत्नाकर सागर के घर पुत्री बनकर जन्म लो। वहां तुम भगवान विष्णु के अंश से अवतार धारण करो। उसके पश्चात् तुम आत्म प्रेरणा से धर्म की रक्षा एवं प्रचार करोगी।

महाशक्तियों की आज्ञानुसार दिव्य कन्या ने रत्नाकर सागर के घर में अवतार धारण किया। कन्या का नाम त्रिकुटा रखा गया। बाद में यही कन्या भगवान विष्णु के अंश से उत्पन्न होने के कारण 'वैष्णवी' नाम से भी विख्यात हुई तथा जिस धर्म का प्रचार कन्या ने किया वह वैष्णव धर्म कहलाया। वैष्णव शब्द का अपभ्रंश नाम ही वैष्णों है।

अल्प आयु में ही देवी त्रिकुटा ने अपनी अलौकिक शक्ति से ऋषियों मुनियों और देवताओं को भी अपनी ओर आकर्षित कर लिया। दिव्य कन्या के दर्शनों के लिए दूर-दूर से लोग आने लगे। कुछ समय बाद त्रिकुटा ने अपने पिता से आज्ञा लेकर समुद्र तट पर, भगवान

राम के ध्यान में लीन हो तप किया तथा उनकी प्रतीक्षा करने लगी। जब रावण ने सीता जी का हरण करने पर, श्रीरामचन्द्र जी वानर सेना के साथ समुद्र तट पर पहुँचे तो उन्होंने वहां समाधि में बैठी उस दिव्य कन्या को देखा। श्रीराम उसकी भक्ति देखकर प्रसन्न हुए। भगवान के पूछने पर त्रिकुटा ने अपने पिता का परिचय दिया और अपनी घोर तपस्या का कारण भी बताया कि मैंने आपको पति के रूप में प्राप्त करने का संकल्प किया है। यह सुन कर प्रभु बोले—हे सुन्दरी! मैंने इस अवतार में एक पत्नीव्रती होने का संकल्प किया है। किन्तु त्रिकुटा ने अपने विचार न बदले अन्त में भगवान राम ने कहा कि मैं एक बार तुम्हारी कुटिया पर वेष बदल कर आऊंगा, यदि फिर तुमने मुझे पहचान लिया तो मैं तुम्हें पत्नी रूप में ग्रहण कर लूंगा। लंका से अयोध्या लौटते समय भगवान वृद्ध साधु का रूप धर कर वहां गये। कन्या उसे पहचान न सकी। भगवान राम ने उसे आश्वासन दिया कि कलियुग में कल्की अवतार के समय तुम मेरी सहचरी बनोगी। उस समय तक तुम उत्तर भारत में माणिक पर्वत पर तीन शिखरों वाले त्रिकूट पर्वत की उस सुरमय गुफा

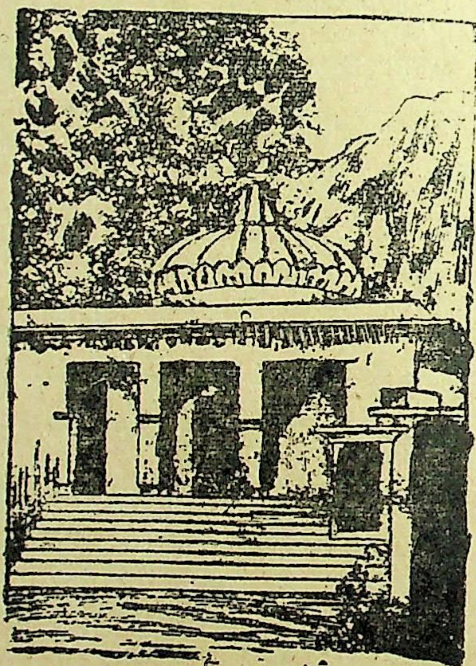
में, जहां तीन महाशक्तियों का निवास है, वहां पहुँच कर तपस्या में लीन हो जाओ। वहां पर तुम अमर हो जाओगी। नल, नील, हनुमान, जामवन्त आदि लंगूर वीर तुम्हारे प्रहरी होंगे। समस्त भारत में तुम्हारी महिमा फैलेगी और वैष्णव देवी नाम से तुम्हारी प्रसिद्धि होगी।

विश्वास किया जाता है कि तभी से रत्नाकर सागर की कुंवारी कन्या वैष्णवी, जो देवताओं के पुण्य आशीर्वाद से प्राप्त हुई, राम अवतार के समय त्रेतायुग से ही इस सुन्दर गुफा में विराजमान है और तपस्या में लीन है। जिसके विषय में प्राचीन कथाओं से आधार लिया जा सकता है। युग बदलते गये, माता अपनी लीलाएं समय-समय पर दिखलाती आई और कितनी ही अन्य कथाओं का जन्म हुआ। माता ने अपनी लीला इन स्थानों पर विशेष रूप से की जिस कारण इसे महत्वपूर्ण माना गया। कलियुग में इसी कथा का प्रचार अधिक हुआ है। प्रमुख लीला स्थान और इतिहास इस प्रकार से हैं—



भूमिका मन्दिर व भक्त श्रीधर का दर्शन--

यहीं से माता वैष्णव देवी की विशेष भूमिका बंधती है। कटरा से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर हंसली



नामक ग्राम में यह मन्दिर है। यहां से थोड़ी सी नई बस्ती है। कहा जाता है कि लगभग ७०० वर्ष पूर्व माता के

परम भक्त श्रीधर जी हुए हैं जो इसी ग्राम के निवासी थे वे नित्य नियम से कन्या पूजन किया करते थे। संतान न होने के कारण वह दुःखी रहा करते थे। श्रीधर जी की सच्ची उपासना और दृढ़ विश्वास देखकर मां वैष्णों को स्वयं एक दिन कन्या रूप धारण करके आना पड़ा। भक्त जी कन्या पूजन की तैयारी कर रहे थे, छोटी-छोटी कन्याएं उपस्थित थीं। उन्हीं में जगमाता भी कन्या बन कर आ गयीं। नियम के अनुसार पांव धोकर भोजन परोसते समय श्रीधर जी की दृष्टि उस महा दिव्य रूप कन्या पर पड़ी। भक्त जी विस्मय में डूब गये क्योंकि यह कन्या उन्होंने कभी देखी न थी और न ही उनके गांव की प्रतीत होती थी। अन्य सब कन्याएं दक्षिणा लेने पर चली गई पर यह दिव्य रूपा वहीं बैठी रही। श्रीधर जी उससे कुछ प्रश्न करने ही वाले थे कि कन्या रूपी महा-शक्ति स्वयं ही बोली, मैं तुम्हारे पास एक काम से आई हूँ, छोटी सी कन्या के मुँह से ऐसी विचित्र बात सुनकर भक्त जी बहुत हैरान हुए। कन्या ने कहा कि आप अपने गांव में और आस-पास यह संदेश दे आओ कि कल दोपहर आपके यहां महान भण्डारे का आयोजन है। इतना कहकर वह कन्या वहां से लुप्त हो गई। श्रीधर जी विचारों में डूब गए। आखिर यह कन्या कौन थी?

हो न हो यह जरूर कोई शक्ति थी, परन्तु भण्डारे वाली समस्या से श्रीधर जी परेशान हो गये। अन्त में उन्होंने कन्या की कही हुई बात को ही मुख्य रखा और आस पास के गांवों में भण्डारे का निमन्त्रण देने निकल पड़े।

श्रीधर जी भण्डारे का संदेशा एक गांव से दूसरे गांव दे रहे थे तो मार्ग में एक साधुओं के दल को देख कर श्रीधर जी ने उन्हें प्रणाम किया और साथ ही उन्हें होने वाले भण्डारे में पधारने का निमन्त्रण भी दिया। गोरखनाथ ने भक्त जी से उनका नाम पूछा और मुस्करा कर बोले—ब्राह्मण ! तू मुझे, भैरवनाथ और अन्य ३६० चेलों को निमन्त्रण देने में भूल कर रहा है। हमें तो देवराज इन्द्र भी भोजन न दे सके।

इस पर श्रीधर जी ने उन्हें कन्या के आगमन वाली सब कथा सुनाई। गोरखनाथ ने विचार किया कि ऐसी कौन सी कन्या है जो सबको भण्डारा खिला सकती है परीक्षा करके तो देखनी चाहिये। अतः उन्होंने श्रीधर जी से कह दिया—हमें भोजन स्वीकार है, कल समय पर आ जायेंगे।

उस दिन तो श्रीधरजी गांव-गांव घूमते रहे, थके हारे रात को आकर सो गये। प्रातःकाल होते ही फिर श्रीधर

जी इस विचार में खो गये कि मुझ में तो इतने वड़े भण्डारे की सामर्थ्य नहीं, प्रबन्ध कैसे हो ? न मालूम समय कब बीत गया और भीड़ एकत्रित होने लगी। उधर गोरख-नाथ और भैरवनाथ जी अपने चेलों सहित आ गये।

श्रीधर जी चिन्ता में बैठे थे कि अचानक ही दिव्य रूप कन्या प्रकट हो गई और पण्डित जी के सम्मुख आकर बोली—अब सब प्रबन्ध हो जायेगा, उठिये और जोगियों से कहिये कि कुटिया में चलकर भोजन करें। श्रीधर जी उत्साह से उठे और गुरुजी से भोजन के लिए कुटिया में पधारने को कहा तो गुरुजी बोले—'हम चेलों सहित कुटिया में नहीं आ सकते क्योंकि स्थान बहुत छोटा है।' इस पर श्रीधर जी बोले—गुरुजी उस कन्या ने ऐसा ही कहा है।

जिस समय जोगी कुटिया में गये तो सबके सब आराम से बैठ गये, फिर भी जगह बच रही। बाहर भी सब लोग बैठ गये। कन्या ने जब अपने एक विचित्र पात्र से सबको भोजन देना आरम्भ किया तो श्रीधर जी प्रसन्न हुये और बाकी सब हैरान !

यह देखकर गोरखनाथ और भैरव ने परस्पर विचार विमर्श किया कि यह कन्या अवश्य ही कोई शक्ति है।

यह वास्तव में कौन है, इसका पता लगाना चाहिये। जिस समय कन्या सबको भोजन परोसती हुई भैरवनाथ के पास पहुँची तो भैरव ने कहा–'कन्या ! तूने सबको उनकी इच्छा का भोजन दिया है लेकिन मेरा मन कुछ और चाहता है। बोलो जोगीराज तुम्हें क्या चाहिये ? कन्या ने पूछा। भैरव ने देवी से मांस और मदिरा मांगी तो कन्या ने जोगी को आदेश के स्वर में कहा–यह एक ब्राह्मण के घर का भण्डारा है। जो कुछ वैष्णव भण्डारे में होता है, वही मिलेगा।

भैरव हट करने लगा क्योंकि उसे तो कन्या की परीक्षा लेनी थी, लेकिन भैरवनाथ के मन की बात तो वैष्णव देवी पहले ही जान चुकी थी। ज्योंही भैरव ने क्रोध करके कन्या को पकड़ना चाहा वह कन्या रूपी महाशक्ति अन्तर्ध्यान हो गई। भैरव ने भी उसी समय उसकी खोज में पीछा करना आरम्भ कर दिया।

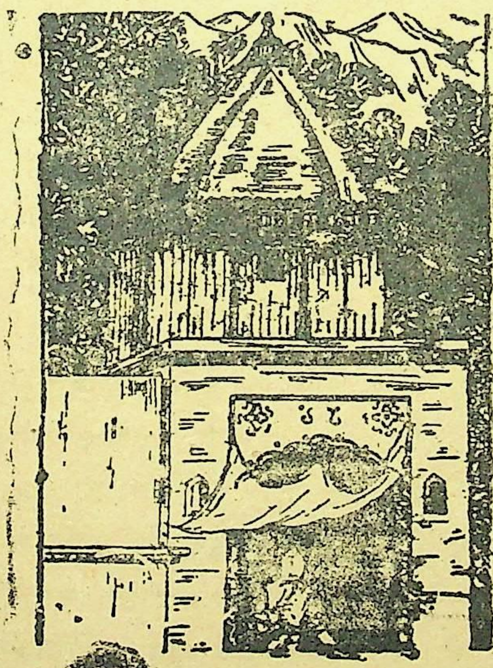
❁ दर्शनी दरवाजा ❁

कटरा से लगभग एक कि० मी० चलने के बाद दर्शनी दरवाजा नामक प्रसिद्ध स्थान है। यहां पर एक ऊंचा सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। इसी मार्ग से होकर देवी

कन्या त्रिकूट पर्वत की ओर गई थी, स्मृति स्वरूप यह स्थान बना है। भूमिका मन्दिर से भी एक मार्ग दर्शनी दरवाजा तक बना है।

बाण गंगा

कन्या रूपी महाशक्ति जब वहां से लुप्त होकर आगे



बढ़ी तो उसके साथ वीर लंगूर भी था। चलते-चलते वीर लंगूर को प्यास लगी तो देवी ने पत्थरों में बाण मार कर

गंगा निकाली और उसकी प्यास को तृप्त किया। स्वयं महाशक्ति ने भी उसी गंगा में अपने केश धोकर संवारे तभी से इस नदी को बाण गंगा कहा जाता है। कहीं २ बाल गंगा भी लिखा गया है।

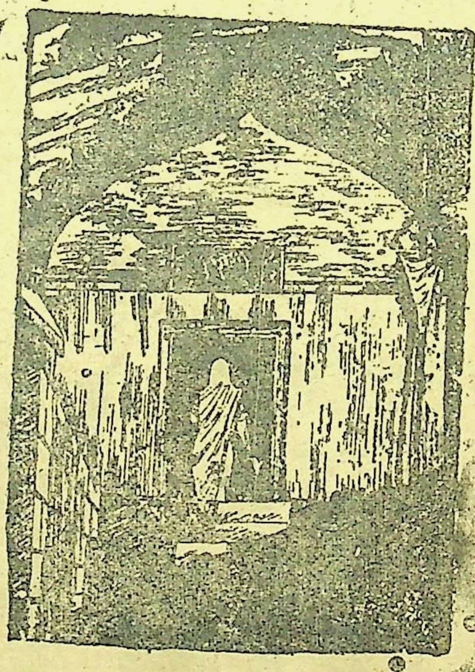
यह स्थान कटरा से लगभग दो किलोमीटर दूर समुद्र तल से लगभग २८०० फुट की ऊंचाई पर त्रिकूट पर्वत की ओर है। जो लोग देवी दर्शन करने आते हैं, बाण गंगा में स्नान करते हैं। इस क्षेत्र में यह भागरथी गंगा की तरह ही पवित्र मानी जाती है। एक पुल पार करके सुन्दर मन्दिर भी है। हलवाई और जलपान आदि की छोटी २ दुकानें हैं। त्रिकूट पर्वत के चरणों में स्थित यह स्थान बहुत रमणीक है।

बाण गंगा से चरण पादुका की चढ़ाई के लिये पक्की पौडियां (सीढ़ियां) हैं। साथ ही दूसरी ओर एक पहाड़ी पगडण्डी अर्थात् कच्चा पैदल मार्ग है, इस मार्ग से खच्चर घोड़े भी जाते हैं। यह रास्ता घुमावदार व लम्बा है। सीढ़ियों वाला मार्ग छोटा व सीधा चढ़ाई का है। मार्ग में कई छोटे २ मन्दिर व साधु महात्माओं के डेरे हैं काली माता का मन्दिर विशेष दर्शनीय है।

—०—

चरण पादुका

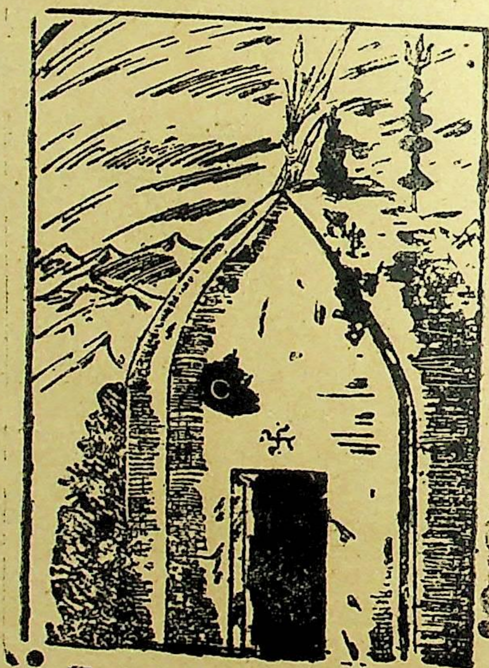
इस स्थान पर रुक कर महाशक्ति देवी ने पीछे की ओर देखा था कि भैरव जोगी आ रहा है या नहीं। रुकने



से इस स्थान पर माता के चरण-चिन्ह बन गये, इसी कारण इस स्थान को चरण पादुका के नाम से पुकारा जाता है।

वाण गंगा से यह स्थान १.५ किलोमीटर की दूरी पर, समुद्र तल से ३३८० फुट की ऊंचाई पर स्थित है। एक मन्दिर, चाय, फल आदि की दुकानें हैं। वैष्णों देवी यात्रा में यह दूसरा पड़ाव है।

आदिकुमारी और गर्भजून गुफा



चरण पादुका से काफी दूर चलकर वैष्णवी कन्या ने सामने एक गुफा के पास तपस्वी साधु को देखकर उसे

अपनी दिव्य झलक दिखाई और कहा हे तपस्वी ! मैं यहां थोड़ी देर आराम करूंगी, कोई मेरे विषय में पूछे तो कुछ न बताना। यह कहकर शक्ति गुफा में चली गई और जिस प्रकार बालक माता के गर्भ में नौ महीने तक रहता है उसी प्रकार कन्या गुफा में नौ महीने तक तपस्या में लीन रही। उधर भैरव कन्या की खोज करता हुआ यहां तक आ पहुँचा। उसने तपस्वी से पूछा—क्या तुमने किसी कन्या को इधर से जाते देखा है ?

यह सुनकर तपस्वी ने भैरव से कहा—जिसे तू साधारण नारी समझता है वह तो महाशक्ति है और आदि कुमारी है (अर्थात् जब से सृष्टि की रचना हुई तभी से उसने कौमारी व्रत धारण किया) जा, यहां से चला जा। भैरव सुनकर क्रोधित हुआ और बोला कि मैं तो ढूंढ कर ही दम लूंगा। भैरव ने गुफा में प्रवेश किया गुफा में बैठी जगमाता यह सब देख रही थी। माता ने अपनी शक्ति से त्रिशूल द्वारा गुफा के पीछे से दूसरा मार्ग बनाया और बाहर निकल गई। इसलिए इस गुफा को गर्भजून और स्थान को आदिकुमारी कहा जाता है। शक्ति आगे बढ़ी, भैरव पीछा करता रहा।

चरण पादुका से यह स्थान ४.५ किलोमीटर तथा समुद्रतल से ऊंचाई ४७८० फुट है। यहां तक पक्का तालाब है। भगवती वैष्णों का आदिकुमारी रूप मन्दिर है। प्राकृतिक सौन्दर्य चारों ओर बिखरा पड़ा है। ठहरने के लिए बड़ी धर्मशाला है। बिस्तर दरी व कम्बल आदि निःशुल्क धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से दिये जाते हैं। जो यात्री शेष यात्रा दूसरे दिन करना चाहें, वह रात भर यहां विश्राम कर सकते हैं। जल पान के लिये ३-४ दुकानें हैं।

हाथी मत्था

आदिकुमारी से आगे क्रमशः पहाड़ी यात्रा सीधी खड़ी चढ़ाई के रूप में प्रारम्भ हो जाती है। इसी कारण इसे हाथी मत्था के समान माना गया है। सीढ़ियों वाले रास्ते की अपेक्षा घुमावदार पहाड़ी पगडण्डी से जाने में चढ़ाई कम मालूम देती है। समुद्र तल से ऊंचाई ६५०० फुट के लगभग है।

सांझी छत

आदिकुमारी से यह स्थान साढ़े चार किलोमीटर तथा समुद्र से लगभग ७२०० फुट है। यहां से भैरव

मन्दिर तक छोटा रास्ता गया है। चाय की दुकान व ठण्डे जल की प्याऊ है।

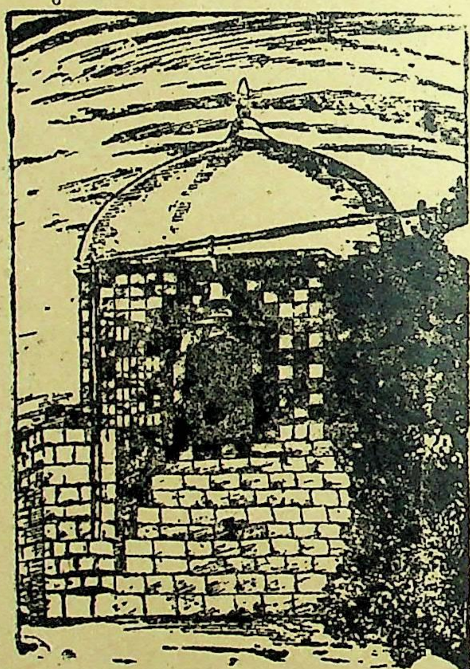
सामान्यतया दरबार जाने वाले यात्री हाथी मत्था से आगे सांझी छत की ओर न जाकर, नये रास्ते से दिल्ली वाली छबीली की ओर चले जाते हैं, चूंकि भैरव मंदिर के अन्दर दर्शन करने का विधान लौटती बार है। इस प्रकार दिल्ली वाली छबीली से होकर जाने में छोटा रास्ता व कम चढ़ाई पड़ती है। लगभग दो कि० मी० दूरी कम हो जाती है। वापसी में भैरव मन्दिर के दर्शन किए जा सकते हैं।

भैरव मन्दिर का इतिहास

देवी कन्या आगे बढ़ती रही, भैरव पीछा करता रहा देवी ने भैरव को आदेश दिया। जोगी तुम वापिस चले जाओ! किन्तु भैरव न माना। चाहती तो महामाया सब कुछ कर सकती थी, परन्तु भैरव की जिज्ञासा भी सच्ची थी।

अन्त में देवी त्रिकूट पर्वत की सुरमय गुफा तक पहुँची। गुफा के द्वार पर उसने वीर लंगूर को प्रहरी बना कर खड़ा कर दिया और भैरव को अन्दर आने से रोकने

के लिए कहा। कन्या गुफा में प्रवेश कर गई तो भैरव भी घुसने लगा। वीर लंगूर के साथ भैरव का युद्ध हुआ, वीर लंगूर परास्त होने लगे। फिर स्वयं शक्ति ने चण्डी का रूप धारण कर भैरव का वध कर दिया। धड़ वहीं गुफा के पास तथा सिर भैरव घाटी में जा गिरा।



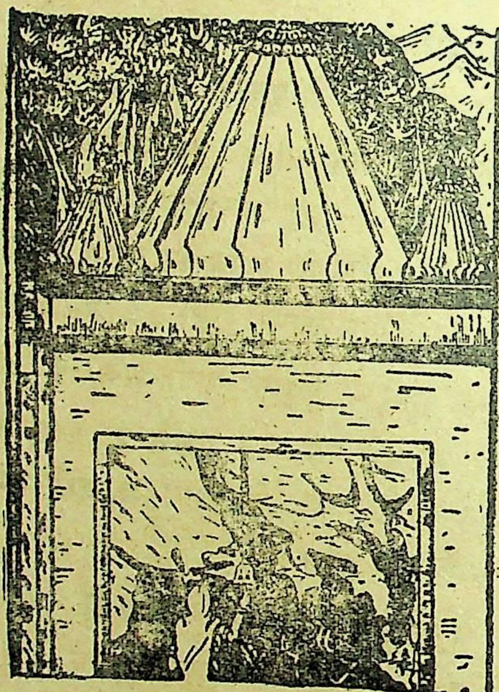
सिर धड़ से अलग होने पर भैरव की आवाज आई—हे आदि शक्ति! कल्याण कारिणी मां! मुझे मरने का

कोई दुःख नहीं. क्योंकि मेरी मृत्यु जगत रचयिता मां के हाथों हुई है। सो हे मातेश्वरी; मुझे क्षमा कर देना। मैं तुम्हारे इस रूप से अपरिचित था। मां अगर तूने मुझे क्षमा न किया तो आने वाला युग मुझे पापी की दृष्टि से देखेगा और लोग मेरे नाम से घृणा करेंगे। 'माता न हो कुमाता।' भैरव के मुख से बारम्बार मां शब्द सुन कर जग कल्याणी मातेश्वरी ने उसे वरदान दिया कि जा मेरी पूजा के बाद तेरी भी पूजा होगी तथा तू मोक्ष का अधिकारी होगा। लोग तेरे स्थान का दर्शन किया करेंगे। तेरे स्थान का दर्शन करने वालों की मनोकामना पूर्ण होगी। इसी कथा के अनुसार यात्री दरबार के दर्शनों के बाद वापसी में भैरों मन्दिर में दर्शन के लिए जाते हैं। जिस स्थान पर भैरव का सिर गिरा था, उसी जगह भैरव मन्दिर का निर्माण हुआ।

सांझी छत से भैरव मन्दिर १.५ कि० मीटर तथा समुद्रतल से ६५८३ फुट की ऊंचाई पर है। भैरव बाबा भक्तों की सब इच्छाओं को पूर्ण करते हुए यहां विराजमान हैं। आस पास चाय व फल आदि की तो तीन दुकानें हैं।

दरबार के दर्शन

उधर भक्त श्रीधर को कन्या के अचानक चले जाने से अत्यधिक बेचैनी थी। उन्होंने खाना पीना त्याग



दिया था। परन्तु माता तो अपने भक्तों के दिल को जानती है। अतएव एक रात स्वप्न में वैष्णों मां ने श्रीधर जी को दर्शन दिए और अपने धाम का दर्शन भी कराया। स्वप्न में ही भक्त जी ने माता के साथ सम्पूर्ण

यात्रा की। प्रातःकाल श्रीधर जी उठे तो बहुत प्रसन्न थे, स्वप्न में देखे हुए स्थानों से उनका हृदय अब तक पुलकित था।

उसी दिन से श्रीधर जी वैष्णों देवी के साक्षात् दरबार की खोज करने लगे। एक दिन स्वप्न में देखे अनुसार चलते-चलते गुफा का द्वार देख लिया और उसमें प्रवेश करके माता के दरबार के साक्षात् दर्शन करके जीवन सफल बना लिया। श्रीधर जी ने हाथ जोड़कर जगदम्बे की आराधना की। माता ने उन्हें चार पुत्रों का वरदान दिया और कहा कि तुम्हारा वंश मेरी पूजा करता रहेगा, सुख शान्ति की प्राप्ति होगी। आज तक उनका वंश मां की पूजा करता आ रहा है।

इसके बाद श्रीधर जी ने गुफा का प्रचार किया। भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती रही, प्रचार बढ़ता रहा। हजारों, लाखों यात्री प्रति वर्ष वैष्णों देवी के दर्शनों के लिए आने लगे।

त्रिकूट पर्वत के आंचल में दरबार माता वैष्णों, भैरव मन्दिर से २.५ किलोमीटर दूरी पर स्थित है। समुद्र तल

से ऊंचाई ५२०० फुट है। दरबार में प्रवेश करने से पूर्व प्रत्येक यात्री को अपना नाम लिखवा कर टोकन लेना पड़ता है, जो कि यात्री-पर्ची देखकर दिया जाता है। पवित्र गुफा में प्रवेश करते समय इसी यात्री संख्या के अनुसार अनुमति मिलती है।

दरबार में प्रवेश करते ही दायें हाथ पर श्रीधर सभा द्वारा नवनिर्मित विशाल भवन है, जिसमें कई हजार यात्री एक साथ ठहर सकते हैं। थोड़ा आगे चलकर बाईं ओर रावलपिण्डी सभा का कई मंजिला भवन है। इसके अतिरिक्त महाराज रणवीर सिंह द्वारा निर्मित एक विशाल भवन है, जिसमें धर्मार्थ ट्रस्ट का कार्यालय एवं भण्डार भी है। यहां लगभग ४० रुपये अमानत रूप में रखकर ही कम्बल तथा एक दरी मिल जाती है। इसी प्रकार लालटेन एवं खाना बनाने के बर्तन, स्टोप आदि भी यात्रियों को मिल सकते हैं। किसी भी प्रकार से परेशानी नहीं उठानी पड़ती। खाने पीने के लिए बड़ा भोजनालय पूजन की सामग्री, चाय एवं हलवा-पूड़ी की दुकानें लगभग चौबीस घण्टे ही खुली रहती हैं। इसके अतिरिक्त प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, पोस्ट आफिस, टेलीफोन व्यवस्था एवं पुलिस सहायता भी उपलब्ध है।

गुफा के अन्दर पिण्डी-दर्शन

पवित्र गुफा में प्रवेश करने से पूर्ण स्नान करना चाहिए। इसके लिए भवन के नीचे एवं बाजार के अन्त में स्थान बना है। पुरुषों एवं महिलाओं के स्नान के लिए अलग-अलग प्रबन्ध है। स्नान के लिए पवित्र गुफा में से आने वाली चरण गंगा की जल धारा गिरती है। इसके पश्चात् टोकन पर मिली संख्या से क्रमानुसार यात्री पंक्तिबद्ध होकर बैठ जाते हैं पवित्र गुफा के अन्दर चमड़े कि वस्तु एवं बीड़ी-सिगरेट ले जाना वर्जित है।

गुफा का प्रवेश द्वार काफी संकरा (तंग) है। लगभग दो गज तक लेटकर या काफी झुककर आगे बढ़ना पड़ता है, तत्पश्चात् लगभग १२ गज लम्बी गुफा में पत्थर की शिला के नीचे उतर कर, कमर झुकाकर धीरे-धीरे आगे चलना होता है। गुफा के अन्दर सीधे खड़ा नहीं हुआ जा सकता। गुफा के अन्दर जनरेटर द्वारा प्राप्त विद्युत प्रकाश का प्रबन्ध है, फिर भी यात्री टार्च ले जावें तो अच्छा रहता है गुफा के अन्दर टखनों की ऊंचाई तक शुद्ध एवं शीतल जल प्रवाहित होता रहता है, जिसे चरण गंगा कहते हैं।

गुफा के अन्त में जिस स्थान पर पवित्र पिण्डियों के दर्शन किए जाते हैं, वहां एक साथ पांच छः व्यक्ति ही बैठ सकते हैं। सीधे खड़ा होना कठिन है। यहां भगवती वैष्णों मां के दर्शन तीन भव्य पिण्डियों के रूप में होते हैं। महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती। पिण्डियों के पीछे कुछ श्रद्धालु भक्तों एवं जम्मू के भूतपूर्व नरेशों द्वारा स्थापित मूर्तियां एवं यन्त्र इत्यादि हैं। पिंडियों के पास माता की अखण्ड ज्योति प्रज्जवलित है। प्रातः एवं सायं दोनों समय पिण्डियों का स्नान, श्रृंगार, पूजन एवं आरती होती है।

यात्री लोग भेंट अर्पित करने के पश्चात् प्रसाद लेकर बाहर आते हैं। विश्वास किया जाता है कि इसी स्थान पर त्रेतायुग से माता वैष्णों तपस्या में लीन हैं और कलियुग में कल्की अवतार की प्रतीक्षा कर रही हैं। गुफा में सर्वत्र उसी का वास है। वैसे कुछ लोग तीन पिण्डियों में से मध्य वाली पिण्डी को ही माता वैष्णों कहते हैं।

बाहर आने पर कन्या पूजन करके उन्हें पूड़ी-हलवा आदि देने का रिवाज है। पवित्र दर्शन का पुण्य लूटकर यात्री लोग मां की जय-जयकार करते हुए वापिस कटड़ा के लिए प्रस्थान करते हैं।

सूर्य कुण्ड

वैष्णों देवी की गुफा के ठीक ऊपर, वैष्णों दरबार से लगभग ६ किलोमीटर की दूरी पर सूर्य कुण्ड नामक एक पवित्र स्थान है। इस स्थान से सूर्योदय का सुन्दर दृश्य दिखलाई देता है।

रसायन गुफा

वैष्णों माता के चरणों से जो निर्मल जल धारा बहती है, उसी चरण गंगा के किनारे-किनारे इस गुफा के लिए मार्ग जाता है। इस गुफा में भगवती के दर्शनों के अतिरिक्त भगवान् विष्णु, सीता राम, राधा कृष्ण, शालिग्राम आदि अनेक देवी देवताओं की मूर्तियां हैं। यह स्थान वैष्णों दरबार से लगभग तीन किलोमीटर दूर है। रसायन गुफा से झिड़ी नामक स्थान के लिए भी यह रास्ता जाता है। गुफा में महात्मा लोग सेवा पूजा कार्य करते हैं।

वैष्णों देवी की नई गुफा

यात्रियों की सुविधा के लिये इस नई गुफा का निर्माण हुआ है। प्रवेश द्वार संकरा होने के कारण

यात्रियों को दर्शन करने के पश्चात् वापिस आने में काफी समय लग जाता था, जिससे अन्य यात्रियों को बड़ी देर तक प्रतिक्षा करनी पड़ती थी तथा सीमित संख्या में ही लोग दर्शन कर पाते थे। गुफा के बन जाने के बाद अब भक्तों को अधिक देर तक प्रतिक्षा नहीं करनी पड़ती तथा भीड़ के दिनों में अधिक से अधिक संख्या में दर्शन हो सकता है। १३ अप्रेल १९७७ को इस गुफा का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।



प्रमुख दूरियां एवं ऊंचाई के लिए सारिणी

स्थान नाम	परस्पर दूरी	समुद्र तल से ऊंचाई
कटरा	—	२५०० फुट
दर्शनी दरवाजा	१ कि. मी.	२७०० "
बाण गंगा	१ कि. मी.	२८०० "
चरण पादुका	१.५ कि. मी.	३३८० "

स्थान का नाम	परस्पर दूरी	समुद्र तल से ऊंचाई
आदिकुमारी	४.५ कि. मी.	४७८६ फुट
हाथी मत्था	२.५ कि. मी.	६५०० "
सांझी छत	२.० कि. मी.	७२०० "
भैरव मन्दिर	१.५ कि. मी.	६५८३ "
वैष्णों भवन	२.५ कि. मी.	५२०० "

नोट–हाथी मत्था से आगे दिल्ली वाली छबीली होकर एक नया छोटा मार्ग भी गया है। अधिकतर यात्री इसी मार्ग से दरबार जाते हैं। इस प्रकार लगभग २ किलोमीटर दूरी कम हो जाती है तथा काफी चढ़ाई भी कम हो जाती है। भैरव मन्दिर के दर्शन वापसी में किये जाते हैं। कटरा से वैष्णव देवी दरबार तक (दिल्ली वाली छबीली होकर) कुल दूरी १४.१ किलोमीटर रह जाती है।

माता वैष्णों देवी के दरबार में दोनों समय निम्न आरती द्वारा पूजन किया जाता है।

कैसी यह देर लगाई है दुर्गे, हे मात मेरी हे माता मेरी।
भव सागर में गिर पड़ा हूँ, काम आदि में घिरा पड़ा हूँ।
मोह आदि जाल में जकड़ा पड़ा हूँ, हे मात मेरी हे मात मेरी।
न मुझमें बल है न मुझमें विद्या न मुझमें भक्ति न मुझमें शक्ति
शरन तुम्हारी गिर पड़ा हूँ, हे मात मेरी हे मात मेरी।
ना कोई मेरा कुटुम्ब साथी, ना ही मेरा शरीर साथी।
चरण कमल की नौका बनाकर, मैं पार हूँगा खुशी मनाकर।
यमदूतों को मार भगाकर, हे मात मेरी हे मात मेरी।
आप ही उबारो पकड़ के, हे मात मेरी हे मात मेरी।
सदा ही तेरे गुणों को गाऊं, सदा ही तेरे स्वरूप को ध्याऊं।
नित प्रति तेरे गुणों को गाऊं, हे मात मेरी हे मात मेरी।
न मैं किसी का न कोई मेरा, छाया है चारों तरफ अंधेरा।
पकड़ के ज्योति दिखादो रास्ता, हे मात मेरी हे मात मेरी।
शरन में पड़े हैं हम तुम्हारी, करो यह नैया पार हमारी।
कैसी ये देर लगाई है दुर्गे, हे मात मेरी हे मात मेरी।

—०—

आरती श्री वैष्णव देवी जी की

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी तेरा पार ना पाया ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल ले तेरी भेंट चढ़ाया ॥
सुआ चोली तेरे अंग विराजे केसर तिलक लगाया ।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शंकर ध्यान लगाया ॥
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी···

राजा भैरों चंवर डुलावे, लंगूर वीर का पहरा ।
ऊंचे पर्वत भवन है मां का झंडा लाल सुनहरा ॥
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी···

सुन्दर गुफा है मात तुम्हारी शीश पे छत्र विराजे ।
गंगा बहे चरणों में, मधुर घंटा ध्वनी बाजे ॥
सुन मेरी देवी पर्वब वासिनी···

जो मन निश्चय करे माता, तेरे द्वार है आवे ।
मुंह मंगियां मुरादां पावें, जन्म सफल हो जावे ॥
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी···

—:*:—

दन्त कथाएं और सम्बन्धित अन्य इतिहास

ध्यानू भक्त की कथा व नारियल की भेंट—

जिन दिनों भारत में मुगल सम्राट अकबर का शासन था, उन्हीं दिनों की यह घटना है। नदौन ग्राम निवासी माता का एक सेवक (ध्यानू भक्त) एक हजार यात्रियों सहित माता के दर्शन के लिए जा रहा था। इतना बड़ा दल देखकर बादशाह के सिपाहियों ने चाँदनी चौक दिल्ली में उन्हें रोक लिया और अकबर के दरबार में ले जाकर ध्यानू भक्त को पेश किया।

बादशाह ने पूछा—तुम इतने आदमियों को साथ लेकर कहां जा रहे हो ?

ध्यानू ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया—मैं ज्वाला माई के दर्शन के लिए जा रहा हूँ। मेरे साथ सब लोग हैं, वह भी माता के भक्त हैं और यात्रा पर जा रहे हैं।

अकबर ने यह सुनकर कहा—यह ज्वाला माई कौन है और वहां जाने से क्या होगा ?

ध्यानू भक्त ने उत्तर दिया—महाराज ! ज्वाला माई संसार की रचना एवं पालन करने वाली माता है। वे भक्तों के सच्चे हृदय से की गई प्रार्थनाएं स्वीकार करती हैं तथा उनकी सब मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं। उनका प्रताप ऐसा है कि उनके स्थान पर बिना तेल-बत्ती के ज्योति जलती रहती है। हम लोग प्रतिवर्ष उनके दर्शन करने जाते हैं।

अकबर बादशाह बोले—तुम्हारी ज्वाला माई इतनी ताकतवर है, इसका यकीन हमें कैसे आवे ? आखिर तुम माता के भगत हो, अगर कोई करिश्मा हमें दिखाओ तो हम भी मान लेंगे।

ध्यानू ने नम्रता से उत्तर दिया—श्रीमान ! मैं तो माता का एक तुच्छ सेवक हूँ, मैं भला कोई चमत्कार कैसे दिखा सकता हूँ ?

अकबर ने कहा—अगर तुम्हारी बंदगी पाक व सच्ची है तो देवी माता जरूर तुम्हारी इज्जत रखेंगी अगर वह तुम जैसे भक्तों का ख्याल न रखेंगी तो फिर तुम्हारी इबादत का क्या फायदा ? फिर तो वह देवी ही यकीन के काबिल नहीं, या तुम्हारी इबादत (भक्ति) ही झूठी है। इम्तहान के लिए हम तुम्हारे घोड़े की गर्दन अलग किए देते हैं तुम अपनी देवी से कहकर उसे दुबारा जिन्दा करवा लेना।

इस प्रकार घोड़े की गर्दन काट दी गई।

ध्यानू भक्त ने कोई उपाय न देखकर बादशाह से एक माह की अवधि तक घोड़े के सिर व धड़ को सुरक्षित रखने की प्रार्थना की। अकबर ने ध्यानू भक्त की बात मान ली। यात्रा करने की अनुमति भी मिल गई।

बादशाह से विदा होकर ध्यानू भक्त अपने साथियों सहित माता के दरबार में जा उपस्थित हुआ। स्नान पूजन आदि करने के उपरान्त रात भर जागरण किया। प्रातःकाल आरती के समय हाथ जोड़कर ध्यानू ने प्रार्थना की—हे

मातेश्वरी ! आप अन्तर्यामी हैं, बादशाह मेरी भक्ति की परीक्षा ले रहा है, मेरी लाज रखना, मेरे घोड़े को अपनी कृपा व शक्ति से जीवित कर देना। चमत्कार प्रकट करना अपने सेवक को कृतार्थ करना। यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार न करेंगी तो मैं भी अपना सिर काटकर आपके चरणों में अर्पित कर दूंगा क्योंकि लज्जित होकर जीने से मर जाना अधिक अच्छा है। यह मेरी प्रतिज्ञा है, आप उत्तर दें—

कुछ समय तक मौन रहा।

कोई उत्तर न मिला।

इसके पश्चात् भक्त ने तलवार से अपना शीश काट कर देवी की भेंट कर दिया।

उसी समय साक्षात ज्वाला माई प्रकट हुई और ध्यानू भक्त का सिर धड़ से जुड़ गया, भक्त जीवित हो गया। माता ने भक्त से कहा कि दिल्ली में घोड़े का सिर भी धड़ से जुड़ गया है। चिन्ता छोड़कर दिल्ली पहुँचो। लज्जित होने का कारण निवारण हो गया और जो कुछ इच्छा हो वर मांगो।

ध्यानू भक्त ने माता के चरणों में शीश झुकाकर प्रणाम कर निवेदन किया–हे जगदम्बे ! आप सर्व शक्तिमान हैं, हम मनुष्य अज्ञानी हैं, भक्ति की विधि भी नहीं जानते। फिर भी विनती करता हूँ कि जगत माता ! आप अपने भक्तों की इतनी कठिन परीक्षा न लिया करें। प्रत्येक संसारी भक्त आपको शीश भेंट नहीं दे सकता। कृपा करके हे मातेश्वरी ! किसी साधारण भेंट से ही अपने भक्तों की मनोकामना पूर्ण किया करो।

"तथास्तु ! अब से मैं शीश के स्थान पर केवल नारियल की भेंट व सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना द्वारा ही मनोकामना पूर्ण करूंगी।" यह कहकर माता अन्तर्ध्यान हो गई।

इधर तो एक यह घटना घटी, उधर दिल्ली में जब मृत घोड़े के सिर व धड़, माता की कृपा से अपने आप जुड़ गया तो सब दरबारियों सहित बादशाह अकबर आश्चर्य में डूब गये। बादशाह ने कुछ सिपाहियों को ज्वाला जी भेजा। सिपाहियों ने वापिस आकर अकबर को सूचना दी। यहां जमीन में से रोशनी की लपटें निकल रही हैं, शायद उन्हीं की ताकत से यह करिमा

हुआ है। अगर आप हमें हुक्म दें तो इन्हें बन्द करवा दें। इस तरह हिन्दुओं की इबादत की जगह ही खत्म हो जायेगी।

अकबर ने स्वीकृति दे दी। शाही सिपाहियों ने सर्व-प्रथम माता की पवित्र ज्योति के ऊपर लोहे के मोटे-मोटे तवे रखवा दिये। परन्तु दिव्य ज्योति तवे फोड़कर ऊपर निकल आई। इसके पश्चात् एक नहर का बहाव उस ओर मोड़ दिया गया, जिससे नहर का पानी निरन्तर ज्योति पर गिरता रहे। फिर भी ज्योति का जलना बन्द न हुआ। शाही सिपाहियों ने अकबर को सूचना दे दी कि ज्योती का जलना बन्द नहीं हो सकता। हमारी सारी कोशिशें नाकाम हो गई। आप जो मुनासिब हो करें।

इस समाचार को पाकर बादशाह अकबर ने दरबार के विद्वान ब्राह्मणों से परामर्श किया। ब्राह्मणों ने विचार करके कहा कि आप स्वयं जाकर देवी चमत्कार देखें तथा नियमानुसार भेंट आदि चढ़ाकर देवी माता को प्रसन्न करें। बादशाह के लिए दरबार जाने का नियम यह है कि स्वयं अपने कंधे पर सवा मन शुद्ध सोने का छत्र लादकर नंगे पैरों माता के दरबार में जाये। तत्पश्चात् स्तुति आदि करके माता से क्षमा मांग लें।

अकबर ने ब्राह्मणों की बात मान ली। सवा मन पक्का सोने का भव्य छत्र तैयार हुआ। फिर वह छत्र अपने कंधे पर रखकर नंगे पैरों बादशाह ज्वाला जी पहुँचे वहां दिव्य ज्योति के दर्शन किए। मस्तक श्रद्धा से झुक गया, अपने पर पश्चाताप करने लगा। सोने का छत्र कंधे से उतार कर रखने का उपक्रम किया परन्तु छत्र गिर कर टूट गया। कहा जाता है कि वह सोने का न रहा, किसी विचित्र धातु का बन गया, जो न लोहा था और न पीतल, न तांबा न सीसा।

अर्थात् देवी ने भेंट अस्वीकार कर दी।

इस चमत्कार को देखकर अकबर ने अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए माता से क्षमा की भीख मांगी और अनेक प्रकार से माता की पूजा आदि करके दिल्ली वापिस लौटा आते ही अपने सिपाहियों को भी भक्तों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने का आदेश निकाल दिया।

अकबर बादशाह द्वारा चढ़ाया गया खण्डित छत्र माता के दरबार की बाईं और आज भी पड़ा हुआ देखा जा सकता है।

* बोलो सांचे दरबार की जय *

महारानी तारा देवी की कथा

(माता के जागरण का माहात्म्य)

माता के जगराते में महारानी तारादेवी की कथा कहने-सुनने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। बिना इस कथा के जागरण को सम्पूर्ण नहीं माना जाता। यद्यपि पुराणों या ऐतिहासिक पुस्तकों में इसका कोई उल्लेख नहीं है। तथापि माता के प्रत्येक जागरण में इसको सम्मलित करने का परम्परागत विधान है। कथा इस प्रकार है—

महाराजा दक्ष की दो पुत्रियां तारादेवी एवं रुक्मन भगवती दुर्गा जी की भक्ति में अटूट विश्वास रखती थीं।

दोनों बहनें नियम पूर्वक एकादशी का व्रत किया करती थी तथा माता के जागरण में प्रेम के साथ कीर्तन एवं माहात्म्य कहा-सुना करती थीं।

एकादशी के दिन एक बार भूल से छोटी बहन रुक्मन ने मांसाहार कर लिया। जब तारादेवी को पता लगा तो उसे रुक्मन पर बड़ा क्रोध आया और बोली— तू है तो मेरी बहन, परन्तु मनुष्य देही पाकर भी तूने नीच योनि के प्राणी जैसा कर्म किया है, तू तो छिपकली बनने योग्य है। बड़ी बहन के मुख से निकले शब्दों को रुक्मन ने शिरोधार्य कर लिया और साथ ही प्रायश्चित का उपाय पूछा। तारा ने कहा—त्याग एवं परोपकार से सब पाप छूट जाते हैं।

दूसरे जन्म में तारा देवी इन्द्रलोक की अप्सरा बनी और छोटी बहन रुक्मन छिपकली की योनि में प्रायश्चित का अवसर ढूंढने लगी।

द्वापर युग में जब पांच पांडवों ने अश्वमेध यज्ञ किया तब उन्होंने दूत भेजकर दुर्वासा ऋषि सहित तैंतीस

करोड़ देवताओं को निमन्त्रण दिया। जब दूत दुर्वासा ऋषि के स्थान पर निमन्त्रण लेकर गया तो दुर्वासा ऋषि बोले–यदि तैंतीस करोड़ देवता उस यज्ञ में भाग लेंगे तो मैं उसमें सम्मलित नहीं हो सकता। दूत तैंतीस करोड़ देवताओं को निमन्त्रण देकर वापिस पहुँचा और दुर्वासा ऋषि का वृतांत पाण्डवों को कह सुनाया कि वह सब देवताओं को बुलाने पर नहीं आवेंगे।

यज्ञ प्रारम्भ हुआ। तैंतीस करोड़ देवता यज्ञ में भाग लेने आए उन्होंने दुर्वासा ऋषि जी को न देखकर पांडवों से पूछा कि ऋषि को क्यों नहीं बुलवाया। इस पर पांडवों ने नम्रता सहित उत्तर दिया कि निमन्त्रण भेजा था परन्तु वे अहंकार के कारण नहीं आये। यज्ञ में पूजन हवन आदि निर्विघ्न समाप्त हुये। भोजन के लिये भण्डारे की तैयारी होने लगी।

दुर्वासा ऋषि ने देखा कि पांडवों ने उनकी उपेक्षा कर दी है तो उन्होंने अत्यन्त क्रोध करके पक्षी का रूप

चारण किया और चोंच में सर्प लेकर भण्डारे में फेंक दिया जिसका किसी को कुछ भी पता नहीं चला। वह सर्प खीर की कढ़ाई में गिर छिप गया। एक छिपकली (जो पिछले जन्म में तारा देवी की छोटी बहिन थी तथा बहिन के शब्दों को सिरोधार्य कर इस जन्म में छिपकली बनी) सर्प का भण्डारे में गिरना देख रही थी। त्याग व परोपकार की शिक्षा अब तक याद थी। वह भण्डार घर की दीवार पर चिपकी समय की प्रतीक्षा करती रही। कई लोगों के प्राण बचाने हेतु उसने अपने प्राण न्यौछावर कर देने का मन ही मन निश्चय किया। जब खीर भण्डारे में दी जाने वाली थी तो सबकी आंखों के सामने वह छिपकली दीवार से कूदकर कढ़ाई में जा गिरी।

निदान, लोग छिपकली को बुरा भला कहते हुए खीर के कढ़ाये को खाली करने लगे, उस समय उन्होंने उसमें मरे हुए सांप को देखा। अब सबको यह मालूम हुआ कि इस छिपकली ने अपने प्राणों को देकर के उन सबके प्राणों की रक्षा की है। इस प्रकार वहां उपस्थित सभी सज्जनों और देवताओं ने उस छिपकली के लिए

प्रार्थना की कि उसे सब योनियों में उत्तम मनुष्य जन्म प्राप्त हो तथा अन्त में मोक्ष को प्राप्त करे।

तीसरे जन्म में वह छिपकली राजा 'सपरश' के घर कन्या बनी। दूसरी बहन तारा देवी ने फिर मनुष्य जन्म लेकर तारामती नाम से अयोध्या के प्रतापी राजा हरिश्चन्द्र के साथ विवाह किया।

राजा सपरश ने ज्योतिषियों से कन्या की कुण्डली बनवाई। ज्योतिषियों ने राजा को बताया कि कन्या राजा के लिए हानिकारक सिद्ध होगी, शकुन ठीक नहीं है अतः आप इसे मरवा दीजिये। राजा बोला—लड़की को मारने का पाप बहुत बड़ा है। मैं उस पाप का भागी नहीं बन सकता। तब ज्योतिषियों ने विचार करके राय दी। हे राजन्! आप एक लकड़ी के सन्दूक में ऊपर से सोना चाँदी आदि जड़वा दें। फिर उस सन्दूक के भीतर लड़की को बन्द करके नदी में प्रवाहित कर दीजिये। सोना-चाँदी जड़ित लकड़ी का सन्दूक अवश्य ही कोई लालच से निकाल लेगा और आपकी कन्या को भी पाल लेगा।

आपको किसी प्रकार का पाप न लगेगा। ऐसा ही किया गया और नदी में बहता हुआ सन्दूक काशी के समीप एक भंगी को दिखाई दिया।

वह सन्दूक को बाहर निकाल लाया। जब खोला तो सोना-चाँदी के अतिरिक्त अत्यन्त सुन्दर कन्या दिखाई दी। उस भंगी के कोई सन्तान नहीं थी। जब उसने अपनी पत्नी को वह कन्या दी तो उसकी पत्नी की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने अपनी सन्तान के समान ही बच्ची को छाती से लगा लिया। भगवती की कृपा से उसके स्तनों में दूध उतर आया। पति पत्नी दोनों ने प्रेम से कन्या का नाम 'रुक्को' रख दिया।

जब वह कन्या विवाह के योग्य हुई तो भंगी ने उसका विवाह अयोध्या के सजातिय युवक के साथ बड़ी धूमधाम से किया। इस प्रकार पहले जन्म की रुक्मन, दूसरे जन्म में छिपकली तथा तीसरे जन्म की 'रुक्को' बन गई।

रुक्को की सास महाराजा हरिश्चन्द्र के घर सफाई आदि का काम करने जाया करती थी। एक दिन वह बीमार पड़ गई। निदान रुक्को महाराजा हरिश्चन्द्र के

घर काम करने के लिए पहुँच गई। महाराज की पत्नी तारामती ने जब रुक्को को देखा तो वह अपने पूर्व जन्म के पुण्य से उसे पहचान गई। तब तारामती ने कहा—हे बहन ! तुम यहां मेरे निकट बैठो। महारानी की बात सुनकर रुक्को बोली–हे रानी जी ! मैं नीच जाति की भंगिन हूँ भला मैं आपके पास कैसे बैठ सकती हूँ।

तब तारामती ने कहा बहन ! पूर्व जन्म में तुम मेरी सगी बहन थी। एकादशी का व्रत खंडित करने के कारण तुम्हें छिपकली की योनि में जाना पड़ा। जो होना था सो हो चुका। अब तुम अपने इस जन्म को सुधारने का उपाय करो तथा भगवती माता की सेवा करके अपना जन्म सफल बनाओ।

यह सुनकर रुक्को को बड़ी प्रसन्नता हुई और उसने उसका उपाय पूछा। रानी ने बताया कि वैष्णों माता सब मनोरथों को पूरा करने वाली है। जो लोग श्रद्धा पूर्वक माता का पूजन व जागरण करते हैं, उनकी सब मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

रुक्को ने प्रसन्न होकर माता की मनौती करते हुए कहा–हे माता ! यदि आपकी कृपा से मुझे एक पुत्र

प्राप्त हो जाये तो मैं भी आपका जागरण करवाऊंगी। प्रार्थना को माता ने स्वीकार कर लिया, फलस्वरूप दसवें महीने उसके गर्भ से एक अत्यन्त सुन्दर बालक ने जन्म लिया। परन्तु दुर्भाग्यवश रुक्को माता का पूजन जागरण करना ध्यान ही न रहा। परिणाम यह हुआ कि जब वह बालक पाँच वर्ष का हुआ तो एक दिन उसे तेज बुखार आ गया और तीसरे दिन उसे चेचक (माता) निकल आई।

रुक्को दुःखी होकर अपने पूर्व जन्म की बहन तारामती के पास गई और बच्चे की बीमारी का सब वृतांत कह सुनाया। तब तारामती ने कहा—तू जरा ध्यान कर के देख कि तुझसे माता के पूजन में कोई भूल तो नहीं हुई!

इस पर रुक्को को छः वर्ष पहले बीती हुई बात का ध्यान आ गया और उसने अपना अपराध स्वीकार किया कि बच्चे को आराम आने पर अवश्य जागरण करवाऊंगी।

भगवती की कृपा से बच्चा दूसरे दिन ही ठीक हो गया। तब रुक्को ने देवी मन्दिर में जाकर पण्डित से

कहा कि मुझे अपने घर माता का जागरण करना है, सो आप मंगलवार को मेरे घर पधार कर कृतार्थ करें। पण्डितजी बोले अरी रुक्को, तू यहीं पाँच रुपये दे जा हम तेरे नाम से मन्दिर में ही जागरण करवा देंगे। तू नीच जाति की है। इसलिए हम तेरे घर में जाकर देवी का जागरण नहीं कर सकते।

रुक्को ने कहा हे पण्डित जी! माता के दरबार में तो ऊंच नीच का कोई विचार नहीं होता वे तो सब भक्तों पर समान रूप से कृपा करती हैं। अतः आपको कोई ऐतराज नहीं होना चाहिये। इस पर पण्डितों ने आपस में विचार करके कहा—यदि महारानी तारामती तुम्हारे जागरण में पधारें तब तो हम भी स्वीकार कर लेंगे।

यह सुनकर रुक्को महारानी के पास गई और सब वृतान्त कह सुनाया। तारामती ने जागरण में सम्मलित होना सहर्ष स्वीकार लिया। जिस समय रुक्को पण्डितों से यह कहने गई कि महारानी जी जागरण में आवेंगी उस समय सैन नाई ने सुन लिया और महाराजा हरिश्यचन्द्र को जाकर सूचना दी। राजा ने सैन नाई से सब बात

सुनकर कहा कि तेरी बात झूठी है। महारानी भंगियों के घर जागरण में नहीं जा सकती फिर भी परीक्षा लेने के लिए उसने रात को अपनी उंगली पर थोड़ा चीरा लगा लिया जिससे नींद न आवे। रानी तारामती ने जब यह देखा कि जागरण का समय हो रहा है परन्तु महाराज को नींद नहीं आ रही तो उसने माता वैष्णों से मन ही मन प्रार्थना की कि हे माता! आप किसी उपाय से राजा को सुलादें ताकि मैं जागरण में सम्मलित हो सकूं। राजा को नींद आ गई। रानी तारामती रोशनदान से रस्सा बांध कर महल से उतरी और रुक्को के घर जा पहुँची।

उस समय जल्दी के कारण रानी के हाथ से रेशमी रूमाल तथा पांव का एक कंगन रास्ते में ही गिर पड़ा। उधर थोड़ी देर बाद राजा हरिश्यचन्द्र की नींद खुल गई। तब वह रानी का पता लगाने निकल पड़ा। मार्ग में कंगन व रूमाल उसने देखे और जागरण वाले स्थान पर जा पहुँचा। राजा ने दोनों चीजें रास्ते से उठाकर अपने पास रखलीं और जहां जागरण हो रहा था वहां एक कौने में चुपचाप बैठकर सब दृश्य देखने लगा।

जब जागरण समाप्त हुआ तो सबने माता की आरती व अरदास की। उसके बाद प्रसाद बांटा गया। रानी तारामती को जब प्रसाद मिला तो उसने झोली में रख लिया। यह देखकर लोगों ने पूछा आपने प्रसाद क्यों नहीं खाया ? यदि आप न खायेंगी तो कोई भी प्रसाद न खाएगा। रानी बोली—तुमने जो प्रसाद दिया वह मैंने महाराज के लिए रख लिया। अब मुझे मेरा प्रसाद दे दो। अबकी बार प्रसाद लेकर तारा ने खा लिया। इसके बाद सब भक्तों ने माता का प्रसाद खाया।

इस प्रकार जागरण समाप्त करके प्रसाद खाने के पश्चात् रानी तारामती महल की ओर चली। तब राजा ने आगे बढ़कर रास्ता रोक लिया और कहा—तूने नीचों के घर का प्रसाद खाकर अपना धर्म भ्रष्ट कर लिया है, अब मैं तुझे अपने घर कैसे रखूं ? तूने तो कुलीन मर्यादा व मेरी प्रतिष्ठा का भी कोई ध्यान नहीं रखा। जो प्रसाद तू अपनी झोली में रखकर मेरे लिए लाई है उसे खिलाकर मुझे भी अपवित्र करना चाहती है। ऐसा कहते हुए जब राजा ने झोली की ओर देखा तो मां भगवती की कृपा से प्रसाद के स्थान पर उसमें चम्पा, गुलाब, गेंदा के फूल कच्चे चावल और सुपारियां दिखाई दीं।

यह चमत्कार देखकर राजा आश्चर्य चकित रह गया। राजा हरिश्यचन्द्र रानी तारा को साथ लेकर वापिस महल को लौट आये। वहां रानी ने ज्वाला मैया की शक्ति से बिना किसी माचिस या चकमक पत्थर की सहायता लिए, राजा को अग्नि प्रज्जवलित करके दिखाई, जिसे देखकर राजा का आश्चर्य और बढ़ गया। राजा के मन में भी देवी के प्रति विश्वास तथा श्रद्धा जाग उठी।

इसके बाद राजा ने रानी से कहा—मैं माता के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूँ। रानी बोली—प्रत्यक्ष दर्शन पाने के लिए बहुत बड़ा त्याग होना चाहिए। यदि आप अपने पुत्र रोहितास की बली दे सकें तो आपको दुर्गा देवी के प्रत्यक्ष दर्शन भी प्राप्त हो सकते हैं। राजा के मन में तो देवी के दर्शन की लगन हो गई थी। राजा ने पुत्र का मोह त्याग कर रोहितास का सिर देवी को अर्पण कर दिया। ऐसी सच्ची श्रद्धा एवं विश्वास देख दुर्गा माता सिंह पर सवार होकर उसी समय वहां प्रकट हो गई और राजा हरिश्यचन्द्र दर्शन करके कृतार्थ हुए। मरा हुआ पुत्र भी जीवित हो गया। यह चमत्कार देखकर राजा हरिश्यचन्द्र

गद्गद् हो गए। उन्होंने विधि पूर्वक माता का पूजन करके अपराधों की क्षमा मांगी। सुखी रहने का आशीर्वाद देकर माता अन्तर्ध्यान हो गई।

राजा ने तारा रानी की भक्ति की प्रसंसा करते हुए कहा—हे तारा ! मैं तुम्हारे आचरण से अति प्रसन्न हूँ। मेरे धन्य भाग, जो तुम मुझे पत्नी रूप में प्राप्त हुई। इसके पश्चात् राजा हरिश्यचन्द्र रानी तारा देवी की इच्छा-नुसार अयोध्यापुरी में माता का एक भव्य मन्दिर तैयार करवा दिया। आयु-पर्यन्त सुख भोगने के पश्चात् राजा हरिश्यचन्द्र, रानी तारादेवी एवं रुक्मन भंगिन तीनों ही मनुष्य योनि से छूटकर देवलोक को प्राप्त हुए।

माता के जागरण में रानी तारा की इस कथा को जो मनुष्य भक्ति पूर्वक पढ़ता या सुनता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, सुख एवं समृद्धि बढ़ती है। शत्रुओं का नाश एवं सर्व मंगल होता है। इस कथा के विना जागरण पूरा नहीं माना जाता।

* बोलो सांचे दरबार की जय *

देवी के नवरात्रों की व्रत कथा—
राजा चन्द्रदेव पर कृपा

प्राचीन काल में जम्मू के राजा चन्द्रदेव बड़े धर्मात्मा तथा दानी थे, उनकी राजधानी जम्मू नगर थी। उन्होंने कई नये मन्दिरों का निर्माण करवाया तथा अनेक स्थानों पर सदाव्रत लगाये। ऐश्वर्य और दान आदि में किसी प्रकार की कमी न थी। परन्तु दुर्भाग्य वश उनके कोई सन्तान न थी। रानी धर्मवती भी इसी कारण दुःखी रहा करती थी।

एक बार राजा चन्द्रदेव रानी सहित गंगा स्नान के लिए हरिद्वार गये। वहां उन्होंने महात्मा हंसदेव जी का

प्रवचन सुना और प्रभावित हुए। उन्होंने महात्मा जी से विनती की कि वह रानी धर्मवती को संतान प्राप्त होने का आशीर्वाद प्रदान करें। महात्मा हंसदेव जी बोले—हे राजन् ! आप संतान प्राप्ति के हेतु सर्वोत्तम चण्डी-पाठ सम्पन्न करावें। इसके अतिरिक्त आपके राज्य में त्रिकूट पर्वत की गुफा में भगवती वैष्णवी शक्ति का निवास है। वहां दर्शन एवं पूजन से मनोरथ पूरे होते हैं।

महात्मा हंसदेव जी के वचन हृदय में रखकर राजा चन्द्रदेव राजधानी लौटे। फिर उन्होंने विधिपूर्वक चण्डी पाठ एवं यज्ञ कराया। फलस्वरूप भगवती की कृपा से परम रूपवती कन्या प्राप्त हुई, जिसका नाम चन्द्रभागा रखा गया। कुछ समय बीतने पर अत्यन्त तेजस्वी सुन्दर पुत्र ने रानी की कोख से जन्म लिया। राजा-रानी धन्य हो गए।

राजकुमारी युवा हो जाने पर उसका विवाह महेशपुर के राजकुमार शांताकार के साथ किया गया। विवाह में

यथाशक्ति दहेज आदि देकर कन्या को विदा किया इसके कुछ वर्ष उपरांत, राजकुमार चन्द्रशील के विवाह पर राजा ने महात्मा हंसदेव जी को जम्मू पधारने तथा युवराज को आशीर्वाद देने का बहुत आग्रह किया। राजा की प्रार्थना स्वीकार करके सद्‌गुरु हंसदेव जम्मू पधारे।

विवाह में भाग लेने के लिए राजकुमारी चन्द्रभागा तथा उसका पति शांताकार भी आए हुए थे। महात्मा हंसदेव जी की दृष्टि जब राजकुमारी के मस्तक पर पड़ी तो उन्होंने योगबल से उसका भविष्य जान लिया। राजा चन्द्रदेव को एकान्त में बुलाकर उन्होंने बतला दिया कि लड़की आज से सातवें दिन विधवा हो जायेगी।

महात्मा जी के वचनों को सुनकर राजा एवं रानी दोनों ने उनके चरण पकड़ लिए और उसकी सुरक्षा का उपाय पूछा ?

हंसदेव जी बोले—हे राजन् ! जब हरिद्वार में आप से पहली भेंट हुई थी, उस समय मैंने आपको त्रिकूट पर्वत-

वासिनी वैष्णव देवी के विषय में बताया था। वह देवी सब संकटों से छुटकारा दिलाने वाली है। यदि आपकी पुत्री उस देवी की आराधना करे तो इस कष्ट का निवारण हो सकेगा।

यह सुनकर राजकुमारी चन्द्रभागा ने देवी की आराधना करनी प्रारम्भ की।

हँसदेव जी के वचनानुसार सातवें दिन राजकुमार शांताकार की कार दुर्घटना होने से मृत्यु हो गई। शोक समाचार चारों ओर फैल गया। राजकुमारी चन्द्रभागा सुनते ही मूर्छित होकर गिर गई। मूर्छा दूर होने पर अत्यन्त विलाप करते हुए प्रतिज्ञा की—हे माता वैष्णव देवी! जब तक मेरे पति को पुनः जीवित न करदें मैं अन्नजल ग्रहण न करूंगी, भूखी प्यासी रहकर अपने प्राण त्याग दूंगी।

नौ दिन तथा नौ रात्रियों तक चन्द्रभागा निरन्तर वैष्णव माता की आराधना में, निराहार रहकर, लगी

रही। तपस्या से प्रसन्न होकर दसवें दिन भगवती वैष्णव देवी ने प्रकट होकर दर्शन दिए। शांताकार के मृत शरीर पर अमृत छिड़ककर उसे जीवित कर दिया। चन्द्रभागा ने बारम्वर स्तुति करके प्रार्थना की—हे माता! आपकी कृपा से मुझे सौभाग्य की प्राप्ति हुई है। अब तो केवल यही अभिलाषा है कि आप हमारे राज्य में निवास करें तथा अपनी कृपा सदैव बनाये रखें।

इसी कारण से आज भी भारत की नारियां घर में खेती बीजती हैं और नौ दिन व्रत रखकर अपने सुहाग की कामना करती हैं। इन्हीं दिनों को नवरात्रे कहते हैं। इसमें तीर्थ यात्रा एवं देवी के दर्शनों का विशेष फल माना जाता है।



श्री दुर्गा जी की आरती

जै अम्बे गौरी मैया जै मंगल मूर्ति मैया जै आनन्दकरणी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि, ब्रह्मा, शिवजी ॥ टेक ॥
मांग सिंदूर विराजत टीकौ मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्र बदन नीको ॥ जै अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला कंठन पर साजै ॥ जै अम्बे०
केहरी वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवक तिनके दुखहारी ॥ जै अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित नासा गज मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति ॥ जै अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैनन निशि दिन मदमाती ॥ जै अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे ॥ जै अम्बे०

तुम ब्रह्माणी, तुम रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जै अम्बे०
चौसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंग अरू बाजत डमरू ॥ जै अम्बे०
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता ॥ जै अम्बे०
भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्पर धारी।
मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ॥ जै अम्बे०
कंचन थार विराजत अगर कपूर बाती।
श्रीमाल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति ॥ जै अम्बे०

दोहा—श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे ॥

—:*:—

वैष्णों देवी की कथा

त्रेतायुग में जब पृथ्वी पर रावण, खरदूषण, त्रिशिरा ताड़का आदि राक्षसों ने अपने अत्याचारों से धर्मात्मा, साधु सज्जनों का भी जीना दुर्लभ कर दिया था तथा सर्वत्र आसुरी प्रवृत्तियों का बोल बाला था उस समय भगवती महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती, सावित्री एवं गायत्री आदि महाशक्तियों ने एक स्थान पर एकत्र होकर पृथ्वी पर धर्म की रक्षा के लिए अपने सम्मिलित तेज से एक दिव्य शक्ति को जन्म देने का निश्चय किया। फलस्वरूप उसी समय इन सभी देवियों के शरीर से तेज की एक-एक किरण ने निकल कर संयुक्त हो, एक सुन्दर दिव्य बालिका का स्वरूप धारण कर लिया।

उस दिव्य बालिका ने प्रकट होकर महाशक्तियों से पूछा—'आपने मुझे किस लिए उत्पन्न किया है। मेरा क्या नाम है और मुझे क्या करना है?'

यह सुनकर महादेवियों ने उस दिव्य बालिकाओं से कहा—हे कन्ये! तुम्हारा नाम 'वैष्णवी' है। पृथ्वी पर

धर्म की रक्षा के उद्देश्य से हमने तुम्हें प्रकट किया है। अब तुम दक्षिण भारत में 'रत्नाकर सागर' के घर में पुत्री बनकर प्रकट होओ। वहां तुम भगवान् विष्णु के अवतार भगवान् रामचन्द्र की शक्ति सीता के अंश से उत्पन्न होओगी तत्पश्चात् तुम आत्म प्रेरणा के अनुसार सब कार्यों को करना।'

इस घटना के कुछ समय पश्चात् उस कन्या ने रत्नाकर सागर के घर में जन्म लिया। वहां उसका नाम 'वैष्णवी' रखा गया।

वैष्णवी ने अल्पायु में ही अपने रूप गुण तथा अलौकिक शक्तियों से सब लोगों को चमत्कृत करना आरम्भ कर दिया। कुछ ही दिनों में उस दिव्य कन्या की प्रसिद्ध दूर-दूर तक फैल गई तथा सहस्रों व्यक्ति रत्नाकर सागर के यहां उस कन्या के दर्शनों के लिए आने जाने लगे।

कुछ समय बाद वह दिव्य कन्या अपने पिता से आज्ञा प्राप्त कर, समुद्र तट के एक निर्जन प्रान्त में कुटी बनाकर रहने लगी। वहां हर समय श्री रामचन्द्र जी का ध्यान स्मरण करना ही उसका मुख्य कार्य था। उसकी

तपस्या को देखकर सूर्य नारायण ने उसे एक दिव्य कमण्डल भेंट किया।

जब भगवान् विष्णु ने रामचन्द्र के रूप में अयोध्या में अवतार लिया और वे अपने पिता दशरथ की आज्ञा से बनवासी हुए, उस समय वह कन्या वैष्णवी समुद्र तट की अपनी कुटिया में समाधि लगाये हुए श्रीरामचन्द्र जी के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी।

रावण द्वारा सीता का हरण कर लिए जाने पर श्री रामचन्द्र जी वानर भालुओं की सेना को साथ लिए हुए जब लंका जाने के लिए समुद्र तट पर पहुँचे, तो वहां उन्होंने उस समाधिनान कन्या को देखा।

श्रीरामचन्द्र जी उसकी कुटिया में गए। श्रीरामचन्द्र जी के पहुँचने से वैष्णवी की समाधि भंग हो गई। श्री रामचन्द्र जी को अपने सामने देखकर उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। विधिवत् स्वागत सत्कार करने के उपरांत उसने श्रीरामचन्द्र जी की स्तुति प्रार्थना की।

जब श्रीरामचन्द्र जी ने उस कन्या से तपस्या करने का कारण तथा परिचय पूछा तो उसने उत्तर दिया—'हे

प्रभो ! मैं रत्नाकर सागर की पुत्री 'वैष्णवी' हूँ। मैंने आपको पति के रूप में प्राप्त करने का संकल्प किया है। इसी के लिए मैं इतने दिनों से तपस्या कर रही थी। अब आप कृपा करके मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करें।

यह सुनकर श्रीरामचन्द्र जी ने कहा—हे सुन्दरी ! अपने इस अवतार में मैंने एक पत्नीव्रती होने का संकल्प किया है, फिर भी तुम्हारी तपस्या का फल तुम्हें प्राप्त होगा अतः मैं यह शर्त रखना चाहता हूँ कि रावण का वध करने के बाद मैं किसी दिन तुम्हारी इसी कुटिया पर वेष बदल कर आऊंगा। उस समय यदि तुम मुझे पहिचान लोगी तो मैं तुम्हें पत्नी के रूप में ग्रहण कर लूंगा अन्यथा जो दैव इच्छा।

यह कहकर श्रीरामचन्द्र जी वहां से चले गये। वैष्णवी पूर्ववत् समाधिस्थ हो गई।

रावण का वध करने के पश्चात् जब रामचन्द्र जी अयोध्या लौट आये, तब एक रात स्वप्न में उन्होंने उस समुद्र तट वासिनी कन्या को देखा। उस स्वप्न के कारण

रामचन्द्र जी को अपने दिये हुए वचन की याद आई और एक दिन वे अपने भाई लच्मण को साथ लेकर वृद्ध साधु का वेष बनाकर वैष्णवी की कुटिया में जा पहुँचे। उस रूप में वैष्णवी उन्हें पहचान नहीं पाई।

तब श्रीरामचन्द्र जी ने स्वयं अपना परिचय देते हुए कहा—'हे देवी! देव को यह स्वीकार नहीं है कि वह मेरे संकल्प की पूर्ति न होने दे। इस अवतार में मैं एक पत्नी व्रती ही रहना चाहता था, इस कारण तुम मुझे इस तरह के बदले हुए वृद्ध साधु के रूप में नहीं पहिचान सकीं। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। विधि का विधान ही ऐसा था।

रामचन्द्र जी के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर वैष्णवी अत्यन्त दुःखी होने तथा पश्चाताप प्रकट करने लगी। तब रामचन्द्र जी ने आश्वासन देते हुए यह कहा—हे कल्याणी! तुम मन में दुःखी मत होओ। कलियुग में जब मेरा कल्कि अवतार होगा तब मैं तुम्हें अपनी शक्ति के रूप में ग्रहण करूंगा। उस समय तक के लिए तुम उत्तर भारत में माणिक पर्वत के तीन शिखरों वाले त्रिकूट पर्वत की उस सुरम्य गुफा में जिसमें तीन

महा शक्तियों का निवास है और शीतल जल सदैव प्रवाहित होता रहता है, जाकर तपस्या करो। वहां मेरे सेवक हनुमान, जामवन्त, नल-नील, आदि तुम्हारे प्रहरी होंगे। उस स्थान पर सब लोग तुम्हारे दर्शनों को पहुँचा करेंगे तथा सम्पूर्ण भारत में तुम्हारी महिमा फैलेगी। तुम उस क्षेत्र में रहकर आसुरी वृत्ति वाले दुष्ट राजा भैरों का संहार करके वैष्णव धर्म का प्रचार करना। सूर्य नारायण ने जो तुम्हें कमण्डल दिया है, उससे तुम्हें सब प्रकार के कन्दमूल फल आदि की प्राप्ति होती रहेगी।

यह कहकर श्री रामचन्द्र जी अयोध्या चले गये। तब वैष्णवी त्रिकूट पर्वत पर आकर निवास करने लगी।

वैष्णवी देवी ने उस क्षेत्र में देवी सम्मति तथा वैष्णव धर्म का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। कलियुग आने पर उस क्षेत्र में भैरव बली नामक एक दुष्ट राजा ने सतलुज से लेकर झेलम नदी तक अपना साम्राज्य स्थापित किया। वह आसुरी भावों से सम्पन्न तथा वैष्णव धर्म का विरोधी था।

वैष्णवी धर्म के अनुयाइयों पर वह भांति-भांति के अत्याचार किया करता था। उसके कारण वहां हा-हाकार

मच गया। वैष्णवी देवी ने जब यह देखा तो उन्होंने 'भैरव बली' के विरुद्ध समस्त वैष्णवों को एकत्र करके भगवद् भक्ति के प्रचार प्रसार का आन्दोलन आरम्भ कर दिया।

भगवती के चमत्कारों को देखकर सहस्रों लोग उनके अनुयायी बन गये। भगवती की प्रसिद्धि एवं चमत्कारों की चर्चा 'भैरों बली के कानों में भी पहुँची। तब उसने भगवती की परीक्षा लेने का निश्चय किया।

एक बार भगवती ने क्षेत्र के निवासियों को समष्टि भण्डारा दिया। उस भण्डारे में सहस्रों लोग सम्मलित हुए। देवी ने अपने कमण्डल में से भांति-भांति के भोज्य निकाल कर सबको भोजन कराया। भैरों बली भी वहां उस भण्डारे में गुप्त रूप से सम्मलित हुआ था उसने जब देवी के चमत्कार एवं सौन्दर्य को देखा तो वह उस पर मोहित हो गया। उसने मन ही मन निश्चय किया कि मैं इस सुन्दरी को अपनी पत्नी बनाऊंगा।

वहां से लौटकर भैरों बली ने अपने एक दूत के द्वारा भगवती के पास यह समाचार भेजा कि राजा भैरों बली

तुम्हारे साथ विवाह करना चाहते हैं, अतः तुम उनके प्रस्ताव को स्वीकार करलो।

भगवती ने इस प्रस्ताव को ठुकराते हुए दूत को उत्तर दिया कि भैरों बली अत्याचारी तथा अधर्मी है, मैं उसका सर्व नाश करके रहूँगी।

दूत के मुख से भगवती के कहे हुए शब्दों को सुनकर भैरों बली अत्यन्त क्रोधित हुआ। उसने अपनी सेना लेकर भगवती से युद्ध करने का निश्चय किया। उधर भगवती ने भी अपने सैनिकों की व्यूह रचना कर भैरों बली को दण्ड देने की ठानी।

कुछ समय बाद भैरों बली के सैनिकों ने भगवती के ऊपर आक्रमण किया। भगवती ने उसकी सेना को मार भगाया, उसके बाद वे स्वयं 'माई देवा' नामक स्थान से हटकर 'भूमिका' (भूमा) नामक स्थान पर चली गई।

भैरोंवली ने भूमिका पर भी अपनी एक सैनिक टुकड़ी को भेजा तो देवी ने उसे भी पराजित कर दिया। उन्हीं दिनों देवी ने 'रियासी' तथा 'सलाल' नामक स्थानों को भैरों वली के राज्य से मुक्त करवा लिया।

'भूमिका' के बाद देवी ने 'चरण पादुका' नामक स्थान पर शिविर लगाया। वहां से आगे चलकर 'आदि-कुमारी' नामक स्थान पर कुछ दिनों रहीं। आदिकुमारी में भगवती ने अपने सैनिकों का जल कष्ट दूर करने के लिए एक सूखे हुए तालाब को सुस्वादु जल से परिपूर्ण कर दिया जो अभी तक विद्यमान है।

भैरों वली ने अपने सैनिकों के साथ इस स्थान पर तीन ओर से चढ़ाई की। इस स्थान पर जो भयंकर युद्ध हुआ उसमें भैरों के दो मुख्य सेनापति एवं असंख्य सैनिक हताहत हुए। इसके बाद भगवती ने गर्भ गुफा में अपना डेरा डालकर युद्ध का संचालन किया। फलतः इस क्षेत्र में भैरों वली तथा भगवती के सैनिकों में पग-पग पर युद्ध होने लगा।

आदिकुमारी के बाद सांझी छत तथा भैरों टाप पर भैरों वली को इतनी बड़ी पराजय मिली कि कुछ दिनों के लिए उसे युद्ध बन्द कर देना पड़ा। इस बीच भगवती ने किष्तवाड़, राम नगर तथा भद्रवाह आदि अनेक स्थानों को भैरों वली के साम्राज्य से मुक्त करा कर, पिंगला, राजेश्वरी आदि देवियों को इन स्थानों का शासन करने के लिए नियुक्त किया।

भैरों बली के साम्राज्य में अब केवल सतलुज का क्षेत्र शेष रह गया था। कुछ दिनों युद्ध बन्द रखकर उसने नये सिरे से अपनी सेना का संगठन किया। इस बीच भगवती उस गुफा में जाकर निवास करने लगी थीं, जिसे आजकल वैष्णों देवी दरबार की पवित्र गुफा कहा जाता है और जिसमें रहकर तपस्या करने के लिए रामचन्द्र जी ने भगवती को आदेश दिया था।

कुछ समय बाद भैरों बली ने अपनी सेना इकट्ठी करके उस गुफा पर आक्रमण कर दिया। जिस समय उसने गुफा के अन्दर प्रवेश करना चाहा, उसी समय भगवती ने अपने त्रिशूल से उसका सिर काट डाला। त्रिशूल से कटा हुआ भैरों बली का मस्तक उस स्थान से लगभग दो मील की दूरी पर जा गिरा तथा धड़ वहीं गुफा के दरवाजे पर पड़ा रहा।

इसके बाद देवी भैरों के कटे हुए मस्तक के पास जा पहुँची और बोली—अरे दुष्ट! इतने दिनों से मैं तुझे खेल खिलाती रही थी परन्तु तू अपनी दुष्टता से बाज नहीं आया। अब इस स्थति को प्राप्त होने के बाद तेरी क्या इच्छा रह गई है, उसे भी कह।

भगवती द्वारा इस तरह कहे जाने पर भैरों वली के मस्तक ने अत्यन्त पश्चाताप प्रकट करते हुए कहा—हे देवी! मैं मूढ़ माया के वशीभूत होकर आपकी महिमा को नहीं जान पाया, जिसका फल मुझे प्राप्त हो चुका है। अब मेरी यही प्रार्थना है कि आप कृपा करके मेरे अपराधों को क्षमा कर दें। हे माता! पुत्र कुपुत्र भले हो जाये परन्तु माता कभी कुमाता नहीं होती। आप मुझे अपनी शरणागत जानकर सद्गति प्रदान करें तथा ऐसा आशीर्वाद दें जिससे मुझ पापी को भी संसार में कोई यश प्राप्त हो।

भैरों के इन विनीत वचनों को सुनकर भगवती वैष्णवी ने दयाद्र होकर कहा—हे भैरों! तुम्हारी आसुरी भावना अब नष्ट हो चुकी है तथा तुमने शुद्ध अन्तःकरण से प्रायश्चित प्रकट करके मुझसे प्रार्थना की है तो मैं तुम्हें वर देती हूं भविष्य में मेरी पूजा के बाद लोग तुम्हारी पूजा भी किया करेंगे। जो लोग इस स्थान पर मेरे दर्शनों के लिए आयेंगे वे मेरे दर्शनों के बाद तुम्हारे भी दर्शन किया करेंगे, इससे उनकी यात्रा सफल होगी।

इतना कहकर भगवती पुनः अपनी पवित्र गुफा में

जा विराजी और भगवान राम के ध्यान में समाधिस्थ हो गई। भैरों का कटा हुआ मस्तक उसी स्थान पर पत्थर बन गया। भैरों का जो धड़ माता की गुफा के दरवाजे पर गिरा था वह भी पत्थर हो गया।

जिस स्थान पर भैरों का मस्तक गिरा था, वहां पर इन दिनों भैरों का मन्दिर बना हुआ है। भगवती वैष्णवी की गुफा की यात्रा करने वाले लोग माता के दर्शन के बाद लौटते समय भैरों मन्दिर के भी दर्शन करते हैं। परन्तु माता के दर्शनों से पहले भैरों मन्दिर के दर्शन नहीं किये जाते।

भगवती वैष्णवी अपनी पवित्र गुफा में समाधिस्थ हो कर भगवान श्रीराम का ध्यान कर रही है। और कल्कि अवतार के होने की प्रतीक्षा में है। पवित्र गुफा में जो तीन पिंडियां हैं, वे भगवती महाकाली, महा लक्ष्मी तथा महा सरस्वती की प्रतीक हैं। भगवती वैष्णवी सीता के अंश से उत्पन्न हुई हैं अतः वे भगवती महा लक्ष्मी की ही प्रतिरूप हैं। गुफा में स्थित पिंडियों के बीच वाली पिंडी भगवती महा लक्ष्मी की है, उसी को 'भगवती वैष्णवी

कहा जाता है' और भक्तजनों को वैष्णों माता के नाम से उसी पिंडी के दर्शन कराए जाते हैं।

वैष्णों देवी शब्द 'वैष्णव देवी' का ही अपभ्रंश है। क्षेत्रिय भाषा के अनुसार भगवती वैष्णवी देवी ही वैष्णों देवी के नाम से प्रसिद्ध है। जो श्रद्धालु भक्त वैष्णों देवी के दर्शन करने जाते हैं, भगवती अपनी कृपा से उनकी मनोकामनाओं को पूर्ण करती हैं।

कलियुग के अन्त में भगवान विष्णु जब कल्कि अवतार लेंगे, उस समय यही भगवती वैष्णों देवी उनकी मुख्य शक्ति होंगी। उस समय ये दुष्टों का नाश करके संसार में धर्म की स्थापना तथा अधर्म का विनाश करेंगे।



ज्योति दर्शन

तेरे नाम की जपां मैं माला
ओ शेरां वाली कर कृपा । कर कृपा…

ए जग कलियां फुल ने तेरे तू बागां दा माली
मेरी बगियां विच है पतझड़ करम कमावण वाली
भरो झोली मेरी मात ज्वाला ओ शेरां वाली कर कृपा
तेरे नाम दी जपां मैं माला ओ…

मन मन्दिर दे विच भवानी आकर करो बसेरा
अपनी ज्योति दे दे मैया होवे दूर अन्धेरा
मेरी दुनियां विच करदे उजाला ओ शेरां वाली कर कृपा
तेरे नाम दी जपां मैं माला ओ…

तू चाहे तो उजड़े बन विच कोयल गीत सुनाये
सीपियां दे विच तेरी जोती जा मोती बन जाये
तेरा चंचल है खेल निराला ओ शेरां वाली कर कृपा
तेरे नाम दी जपां मैं माला ओ…

—:※:—

आ भगतां दाती दे द्वारे

तर्ज—रंग महल के दस···　　　　सत्यं शिवम् सुन्दरम्

आ भगतां दाती दे द्वारे
जगमग जित्थों मां दी ज्योत जली है
संगत जय जय करदी चली है
है नी माए तू बक्शन हार
ओ जिसनूं फड़ लिया तेरा द्वार है नी माए तू···

दर्शनां दे विच पाप अपने असी धोलो
मां दे भवन दा द्वार है खोलो
सिंह सवारी पे मां लगदी भली है
संगत जय जय करदी चली है
आ भगतां दाती दे···
ओ भगतां चरणां दे विच सिर डार
है नी माए तू बक्शन हार, ओ···

लाल रंग चोला पा के मन हर्षाया है
सिर साने दे छत्र दी छाया है
महकियां दाती दे दर फुलां दी कली है
संगत जय जय करदी चली है

जगमग जित्थों मां दी ज्योत जली है
आ भगतां दाती दे···
शिव, विष्णु तुसी ध्यान लगां दे
ध्यानू काट के शीश चढ़ां दे
'शिवगिरि' चर्चा मां हर गली तों गली है
संगत जय जय कर दी चली है
जगमग जित्थों मां दी ज्योति जली है संगत···
आ भगतां दाती दे···



दाती सों कर प्यार ओ बचड़े

तर्ज—मतलब का है प्यार·· (खानदान नई)

दाती सों कर प्यार वे बचड़े
दाती सों कर प्यार
तुसी आ प्यार मात सों कर लै
छड़ के बुरे काम इन्हूँ भजि लै
जग विच कर दे सी मां पार
वे बचड़े दाती तों कर···

दर्शन पावन नूं अकबर आं दे
अकबर आंदे ध्यानू शीश चढ़ां दे
बोलियां भगताँ जय जयकार
वे बचड़े दाती तों कर प्यार···

'शिवगिरि' आये शीश नवांदे
माता दी जयकार बुलां दे
शीश चरणाँ में दित्ता सी डार
वे बचड़े दाती सों कर···



छड़ के जाओ न मैंनू माता

छड़ के जाओ न मैंनू माता
तैनूं इहों में अर्ज सुनाता
ओ कित्तां सी जयकार
माए नी मेरी बिगड़ी सुधार
पांदा दर्श तुसी जदां नाल आंदी
आके भगतां दी बिगड़ी सुधार
इकौं है मेरी यही अरदास

दर्शन दे विच सिंह सवार
माए नी मेरी बिगड़ी सुधार...

छड़ के जाओ न मैंनूं माता
मैं नूं फड़ लिया सांचा द्वारा
बोला दाती दा जयकारा
दित्ता सी तन मन डार
माए नी मेरी बिगड़ी सुधार...

ब्रह्मा विष्णु तुस्सी पार ना पांवां
किस तरियों मैं तुस्सी गुण गांवां
मधुर बोल गुन्जार माए नी मेरी बिगड़ी सुधार...

छड़ के जाओ न मैंनूं माता
शीशां दे विच दया दा कर घर
मेहर करां मां अपने भगतन पर
सब दी है यही पुकार
माए नी मेरी बिगड़ी सुधार
छड़ के जाओ न मैंनूं माता...

—※—

शेरां वालीए दा हार

फुल्लां दा बनाया तेरा हार शेरां वालिए
गोदी विच बिठाके दे दे प्यार शेरां वालिए
भगत ध्यानू ने ध्यान तेरा लाया सी
कटे हुए घोड़े दा शीश मां मिलाया सी
शहन्शाह (अकबर) दा तोड़्या अहंकार शेरां वालिए
गोदी विच बिठाके दे दे प्यार॰॰

चण्डी रूप धार के मां तू दुष्टां नू मारे
श्रद्धा लेके आवे जेड़ा उसदा बेड़ा तारे
सारयां लई खुला तेरा द्वार शेरां वालिए
करदे भगतां दा बेड़ा पार शेरां वालिए
गोदी विच बिठाके दे दे प्यार शेरां वालिए
जयकारा शेरां वाली दा



झूठा सब संसार

तर्ज—कर्म किये जा फल की चिन्ता‥ (सन्यासी)

झूठे सारे रिश्ते नाते झूठा सब संसार
सच्चा है तो इस दुनियां में जगदम्बे का द्वार
ये है सांचा दरबार ये है सांचा दरबार
इस द्वारे पर मां के बन्दे आते हैं हर साल
राजा हो या रंक सभी को माता करे निहाल
अब तो ठाठ से रहते हैं जो थे पहले कंगाल
माता सबकी किस्मत बदले करती मालोमाल
सबको खुशियां मिलती हैं ये सुखों का भण्डार
सच्चा है तो इस दुनियां में जगदम्बे‥

इस दर पे आने वालों का लगता हमेशा मेला
कोई है परिवार सहित तो कोई चला अकेला
जय जयकार मचाता आवे नित भक्तों का रेला
कोई आया कई बार तो कोई नया नवेला
प्रेम से कोई कुछ भी लावे करती है स्वीकार
सच्चा है तो इस दुनियां में जगदम्बे‥

पूजा प्रेम बराबर दोनों बन्दे समझ न पाये
पूजा में जो प्रेम न हो तो पूजा निष्फल जाये

मन की शांति सच्चा सुख है बिरला कोई पाये
'अंजाना' तू अज्ञानी है तुझको कौन भला समझाये
हाथ जोड़कर मां से विनती करले बारम्बार
सच्चा है तो इस दुनियां में जगदम्बे...



दाती दे दर चल वे भगता

तर्ज–गीत गाता चल ओ साथी... (गीत गाता चल)

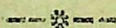
दाती दे दर चल वे भगतां दाती दे दर चल
बेड़ा तुसी पार लगांदी माए न हर पल
दाती दे दर चल वे भगतां...

दर्शन माता सिंह भवारी ते दिखांदी
नैया मां भव से पार ते लगांदी
ओ सुबह ते शाम व्यर्थ नालां जाये ना निकल
दाती दे दर चल वे भगतां...

जित्थे ध्यानू ने आके ध्यान लगाया सी
कट के माता नूं अपना शीश चढ़ाया सी

अकबर दे मन में ज्यों उठ दी हिलोर
जय अम्बे माता दी सों मच रहा शोर
कर लै सानूं दर्श कहीं माता ना दे चल
दाती दे दर चल वे भगतां...

लाल रंग चोला दाती गल विच पाया सी
शीश विच्चों हीरियां दा मुकट सजाया सी
मुखड़ा ज्यों चमके सी चन्दा सो चकोर
कोयल कूके काली करे मतवाला शोर
कर लै तू आके मां ते प्यार नाल गल
दाती दे दर चल वे भगतां...



संगता द्वारे ते आ गई

तर्ज–राम दुलारी माईके... (मेरी बीवी की शादी)

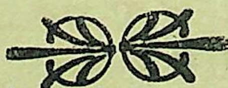
संगतां द्वारे ते आ गई
चरणी मत्था तेरे ला गई
ओ माए संगतां द्वारे...
अर्ज है मां मैंनूं दर्श दिखाये
सिंह दी सवारी जद चढ़ के आये

जय जय करन लागे नैना दुखन लागे
सुरतिया दिल दे विच तेरी आ गई
चरणी मत्था तेरे ला गई...

सब नर तुसी जयकार बुलांदे
मन्दिरां विचों माए ज्योत जलांदे
दर्शन दिखत नाहीं तुसी आवत नाहीं
भेंटां दी झड़ी संगतां ला गई
संगतां द्वारे ते आ गई...

जो तुस्सी चरणों विच ध्यान लगांदे
मन दे चिन्ते पूरे हो जांदे
इहौं अर्ज मानो हे दाती मैया
तुसी है मां इस जन की खिवइया
संगता द्वारे ते आ गई...

'शिवगिरि' तैनूं मां अर्ज सुनांदे
चरणी विचों ते शीश झुकां दे
सांची जगत विचों मेरी तू मइया
भंडार सब दे तुस्सी भर गई
संगतां द्वारे ते आ गई...



हे जगदम्बा मां ज्वाला

तर्ज–है शुक्र कि तू है लड़का··· (हिम्मत)

हे जगदम्बा मां ज्वाला तेरा तेज करे उजियाला

है तू सबकी प्रतिपाल ओ जगदम्बे मैया
हमें दर्श दिखाओ मां कर सिंह सवारी
दुःख आके मिटाओ मां हे बलकारी
सन्तन सुखकारी है मां तू निर्बल कारी
महिमा तेरी जग में न्यारी, ओ जय··
हे जगदम्बे मां ज्वाला

जो भी जन तेरा मां ध्यान लगाते
वो तुमसे बेड़ा मां भव तरवाते
बेड़ा भव से तरवाते मां का ध्यान लगाते
है तू ही मात खिलइया ओ जय जगदम्बे···
हे जगदम्बे मां ज्वाला··

तेरी जोत नूरानी अकबर ने जानी
जग बीच भवानी मात ध्यानू ने मानी
सारो काज भवानी माता आज भवानी माता
जिन्दा ध्यानू भक्त कर डाला, ओ जय—
हे जगदम्बे मां ज्वाला··

'शिवगिरि' मात को शीश झुका जा
मीठे बोलों में मां का गुणगान तू गा जा
कर इतना ही ध्यान मां को ही पहचान
मां ने तुझको ही पाला ओ जय जगदम्बे मइया
हे जगदम्बे मां ज्वाला···

—:※:—

मेरी विनती सुनो हे मात

तर्ज—मेरे महबूब शायद··· (कितने पास कितने दूर)

मेरी विनती सुनो हे मात
सिर को चरणों में डाला है
मैं जब से मांगता अमृत
मिला क्यों विष का प्याला है
मुझे महसूस होता है मिलेगा विष से अमृत भी
महक गुलशन उठेगा खिलेंगी सुख की कलियां भी
बनी क्यूं आज ये मेरे लिए कांटों की माला है
मेरी विनती सुनो हे मात···
दशा मुझ दीन जन की आ संभालो जगत जननी माँ
माँ दुख की निवारणी हो तुम हो सुख करणी माँ

तुम्हीं ने लाखों भगतों को
माँ आके जग में संभाला है
मेरी विनती सुनो हे मात...

जो दर पे खाली आया था भरी तूने उसकी झोली मां
तेरे दर कष्ट लाया था बनी तू उसकी भोली मां
जगत में दुष्ट हरने को तेरा अवतार ज्वाला है
मेरी विनती सुनो...

शरण 'शिवगिरि' आया है तेरे दर सर झुकाने को
नहीं कुछ पास है मेरे प्रेम की भेंट चढ़ाने को
तेरे दास ने गूंथी वही फूलों की माला है
मेरी विनती सुनो हे मात...



जगदम्बे दर्शन दे मैंनू

तर्ज—मैं तुलसी तेरे आंगन की

जगदम्बे दर्शन दे मैंनूं
असी द्वार विच रोज मैं आंदा

चरणां दे विच ध्यान लगांदा
ध्यादां सी मां तैनूं
जगदम्बे दर्शन दे मैंनूं...

लज्जा सब दी तू ही रख दीं
तू ही मां बेड़े पार कर दीं
इहौं चरणां विच मात बैठ के तुसी गल मिट्ठी पावांगे
दर ते तेरे आके मइया सोये भाग जगावांगे
वाणी रस अमृत भर दे मां मैंनूं
झूठा इहौं संसार सी सारा माता दीदार तेरा प्यारा
मान लिया सी मां तैनूं
जगदम्बे दर्शन दे मैंनूं...

जग दे विचों तुसी जोत निराली
तुसी ही अम्बे, तुसी ही मां काली
मेहर गरीबों पे मां करदो
'शिवगिरि' हूँ गुण तो भर दो
सारो माँ काज सानूं
जगदम्बे माँ दर्शन दे मैंनूं...

—:※:—

जय बोलो देवी मात की

तर्ज—जय बोलो भोले नाथ की··· (भूख)

जय बोलो देवी अम्बे मात की
चरणों में शीश झुकाओ नर नार सभी मिल गाओ
माता के गुण गाओ मुंह मंगियां मुरादां पाओ
माता सबके कष्ट निवारे कमी नहीं किस बात की
जय बोलो देवी अम्बे मात···

इसके दर विच आकर के होंदे दुखड़े दूर
आशा लेकर के आया हो चाहे कोई मजबूर
शेरां वाली दे दर आजा चमके तेरा नूर
चाहे छलनी होजा पइयां चाहे चकनाचूर
किवाड़ां खोलो तुसी मनां दे गात की
जय बोलो देवी अम्बे मात···

ब्रह्मा और विष्णु तेरा दर्शन पांदे
नारद शारद शेष जी मनांदे
भगतां मिल मिल के जयकारे बुलांदे

'शिवगिरि' द्वार ते मत्था चरणां में झुकांदे
दर खोलो जय बोलो अम्बे मात की
जय बोलो देवी अम्बे मात...

—:※:—

मैंने तो सुना था आये जो भी दरबार

तर्ज—तीन बजे बोला था... (दुनियादारी)

मैंने तो सुना था आये जो भी दरबार
सुनती है तू उस गरीब की पुकार
ये गरीब भी आके पड़ा तेरे द्वारे
अपने पराये सब छिन गये सहारे
काम क्रोध लोभ मोह मेरे पीछे ये पड़े हैं
कैसे इनसे पीछा मैं छुड़ाऊं
पापों की गठरी सर पे सम्भाले
कभी इत जाऊं कभी उत जाऊं
ये पाप मेरे मुझे ना ले डूबे
ये ही सोचूं और घबराऊं
डूबने लगूं दो कर देना आके तू किनारे...

रोना तड़फना आहें ठण्डी भरना
मुझे ये दिया है जहां ने
सूनी सूनी अंखियों में चमके जो
खुशियां वो पाऊं कहां से
सर टकराऊंगा रो-रो मर जाऊंगा
लेकिन न जाऊं यहां से
निर्बल 'शिवगिरि' तेरा ये पुकारे···

— ❋ —

दाती मिलेगी मुझे प्यार मिलेगा

तर्ज—नींद उड़ेगी तेरी चैन उड़ेगा (राम भरोसे)

दाती मिलेगी मुझे प्यार मिलेगा
जोत जगा के मेरा मनुआ खिलेगा
फिर तो मैं सारी उमर सेवा करूंगा
वहीं पे जिऊंगा वहीं पे मरूंगा

जब भी मां मुझ पर मेहरबान होगी
मेरी जान दर पे कुरबान होगी
कष्ट मिटेंगे सारे और सुख मिलेगा
जोत जगाके मेरा मनुवा···

सुनने में आया जो भी वहां जाये
मन की मुरादों से झोली भर लाये
भरो झोली जिसकी वो ही ये गाते
मिली अब रोशनी कटी काली रातें
सच्ची श्रद्धा से जो दर चलेगा
जोत जगाके मेरा मनुवा··

देखना है किस पल शेरां वाली आये
अपनी मोहनी मूरत हमें कब दिखाये
हम भी आज मां को बुलाके कहेंगे
दूर रहे अब तक अब ना रहेंगे
'रमेश' को दाती दर्शन मिलेगा
जोत जगाके मेरा मनुवा··

—:*:—

जब जाता होगा तू मन्दिर

तर्ज—जब आती होगी याद मेरी (फांसी)

जब जाता होगा तू मन्दिर
मां की जय जय बुलाता होगा

चरणों में तू उसके जाके खाली दामन फैलाता होगा
खाली झोली में वो तेरी आके
कुछ खुशियां भी भरती होगी
जो जो दुखड़े सुनाये हैं उसको
हंसते हंसते वो हरती होगी
शेरां वाली की महिमा के बल से
तुझे दुःख ना बुलाता होगा
खुद गरज जमाना बड़ा है
इसमें मुश्किल है मां मेरा जीना
बेदर्द, सितमगर, बेरहमी
इसने सब कुछ ही मेरा छीना
मेरे हाल पे आकाश
खूं के आंसू बहाता होगा...
तूने ध्यानू को पार किया था
अकबर का अभिमान गिराया था
ये 'रमेश' भी तो है मां ध्यानू तेरा
तूने उसको ही क्यों तड़फाया
तुझे दिल में बसाये जो
वो भव सागर तर जाता होगा...



दुखड़े कट जाते हैं

तर्ज—पहरे उठ जाते हैं— (फांसी)

दुखड़े कट जाते हैं बादल छंट जाते हैं
पा जाते हैं वो ही दाती को चरणों में जो जाते हैं
मैंने देखी तेरी सूरत मूरत दिल को भा गई
दिल से कहता खोजा जिसको
वो ही मंजिल आ गई
सो जाती है किस्मत उनकी जो सो जाते हैं
झूठे हंसते और सच्चे यहां रोए
धर्म तड़पता आहें भर भर
नेकी दबी है बदी के नीचे
बदी करे सब हंस हंस कर
ऐसे इन्सां जीवन का सुख खो जाते हैं
पा जाते हैं वो ही दाती··
ना कुछ मेरा सब है तेरा
तेरा है तो ले ले मां
'रमेश' है दुखिया बेसहारा
आके सहारा दे मां
भगत तेरे चरणों में पुष्प चढ़ाते हैं



क्या गाऊं महिमा द्वार की

तर्ज—नौकरी सौ की हजार की (आहुति)

क्या गाऊं मैं महिमा द्वार की
कीमत नहीं उसके प्यार की
प्यार मां का प्यारा है जीने का सहारा है
प्यारी-प्यारी लोरी दुलार की
कीमत नहीं उसके प्यार की···

खाली ना कोई आया है चरणों में उसके जाके
हुए हैं पार भक्त सभी महिमा उसकी गाके
प्यासी हैं ये अंखियां दीदार की
कीमत नहीं उसके प्यार की···

ध्यानू भी एक था मां तेरे ही लालों में
शाम सवेरे रहता था तेरे ही मां ख्यालों में
सुनती थी उसकी पुकार भी
कीमत नहीं उसके प्यार की···

दाती आ रही है सभी दर्शन पालो
खाली हो जिसका दामन दामन को फैला लो
'रमेश' बीती घड़ियां इन्तजार की
कीमत नहीं उसके प्यार की···

—*—

